सत्यनिष्ठा

सत्यनिष्ठा भागवत द्वारों की कुंजी है

श्रीअरविन्द तथा श्रीमाँ के वचन

सत्यनिष्ठा

सत्यनिष्ठा भागवत द्वारों की कुंजी है

श्रीअरविन्द तथा श्रीमाँ के वचन

प्रकाशक
श्रीअरविन्द सोसाइटी राजस्थान राज्य समिति, जयपुर, राजस्थान

विषय सूची

१. सत्यनिष्ठा भागवत द्वारों की कुंजी है ... 4
२. सच्चाई के अनेक स्तर ... 6
३. सच्चाई — एक सुरक्षा ... 7
४. सच्चाई — दुर्लभ गुण ... 8
५. सद्‌गुणों का उत्सव ... 9
६. अपरिहार्य गुण ... 10
७. सच्चाई या पारदर्शिता ... 10
८. सच्चाई और धैर्य ... 11
९. सत्यनिष्ठा प्रगतिशील है ... 13
१०. सच्चाई और समर्पण ... 15
११. पूर्ण सच्चाई कठिन है ... 16
१२. स्वांग मत करो ... 18
१३. पारदर्शक सच्चाई ... 21
१४. आवश्यकता है पूर्ण सच्चाई की ... 23
१५. अभीप्सा का प्रभाव ... 25
१६. उनकी उपस्थिति ... 26
१७. भागवत कृपा ... 27
१८. सच्चाई और विजय ... 28
१९. हमेशा सच्चे ... 30
२०. हर कर्म का उत्सर्ग ... 32
२१. आत्मविश्वास ... 35
२२. अडिग धैर्य ... 39
२३. विज्ञानमय ... 41
२४. निष्कपटता ... 42

यदि तुम सच्चे हो तब भगवान का आदेश तुम्हारे पक्ष में होगा।

– श्रीमां

सत्यनिष्ठा भागवत द्वारों की कुंजी है

मां, ...

इसका क्या अर्थ है?

यह एक साहित्यिक उपमा है, मेरे बच्चे, यह उपमायुक्त, प्रतीकात्मक, साहित्यिक भाषा में इस तथ्य को दर्शाता है कि सच्चाई से व्यक्ति सब कुछ पा सकता है, भगवान् को भी। यदि किसी द्वार को खोलना हो तो उसकी कुञ्जी होनी चाहिये, है न? अतएव, जो द्वार तुम्हें भगवान् से अलग करता है, सच्चाई उसी की कुञ्जी का काम करेगी, वह उस द्वार को खोल देगी और तुम्हें अन्दर जाने देगी, बस इतना ही।

CWM 6 : 145

सच्चा होने के लिए सत्ता के सभी भागों को भगवान् के लिए अपनी अभीप्सा में एक होना चाहिये ---- यह नहीं कि एक भाग तो चाहे और दूसरे भाग इन्कार करें या विद्रोह कर दें। अभीप्सा में सच्चा होने का अर्थ है भगवान् को भगवान् के लिए चाहना; नाम, ख्याति, प्रतिष्ठा और शक्ति या दर्प की किसी तुष्टि के लिए नहीं।

CWM 14: 71

सच्चाई का अर्थ है केवल भागवत प्रभाव को स्वीकार करना न कि निम्न शक्तियों के प्रभाव को।

CWSA 29: 50

सच्चाई का अर्थ है सत्ता की सभी गतिविधियों को अभी तक प्राप्त उच्चतम चेतना और उपलब्धि तक उठाना।

सच्चाई समस्त सत्ता के सभी भागों और क्रियाकलापों को केन्द्रीय 'भागवत इच्छा' के चारों ओर एक और समस्वर करने की मांग करती है।

CWM 14: 71

(सच्चाई :) सत्ता के किसी भाग को भगवान की ओर अभीप्सा का विरोध करने की स्वीकृति नहीं देना।

CWSA 29: 50

सच्चाई का अर्थ है अपनी सभी गतिविधियों को भगवान की ओर उठाना।

Evening talks with Sri Aurobindo by AB Purani, p.581

केवल एक अपरिहार्य शर्त है, सच्चाई।

CWSA 29: 50

सच्चे बनो।

सच्चाई 'देवत्व' तक जाने का दरवाजा है।

CWM 14: 65

सच्चाई के अनेक स्तर

मधुर मां, सच्चाई का ठीक-ठीक अर्थ क्या है?

सच्चाई के कई स्तर होते हैं।

सबसे प्राथमिक स्तर यह है कि ऐसा न हो कि तुम एक बात कहो और सोचो कुछ और, मांग एक की करो और चाहो कुछ और। उदाहरण के लिए, प्रायः ऐसा होता है कि तुम कहते हो: ''मैं प्रगति करना चाहता हूं और अपनी त्रुटियों से छुटकारा पाना चाहता हूं'' और, साथ-ही-साथ, उन्हें अपनी चेतना में पोसते रहो, उन्हें बड़ी सावधानी से छिपाये रहो ताकि कोई बीच में पड़ कर उन्हें भगा न दे। यह वास्तव में बहुत आम बात है। यह दूसरा स्तर हो गया। पहला स्तर तो तब है जब कोई, उदाहरण के लिए, यह दावा करता है कि उसके अन्दर बहुत अभीप्सा है और वह आध्यात्मिक जीवन चाहता है, परन्तु साथ ही पूरी तरह... कैसे कहा जाये? निर्लज्ज होकर ऐसी चीजें करता है जो आध्यात्मिक जीवन से एकदम उल्टी हैं। यह सच्चाई का नहीं, कपट का ही एक स्तर है जो बिलकुल स्पष्ट है।

लेकिन एक दूसरी अवस्था है जिसके बारे में मैंने तुम्हें अभी बतलाया है, जो यूं है: सत्ता का एक भाग है जो अभीप्सा करता है और कहता है और सोचता भी है और अनुभव भी करता है कि वह बहुत ज्यादा चाहेगा कि अपने दोषों और त्रुटियों से पिण्ड छुड़ा ले; साथ ही, दूसरे भाग हैं जो इन दोषों और त्रुटियों को बहुत सावधानी से छिपाते हैं ताकि उन्हें प्रकाश में लाने और उन पर विजय पाने के लिए बाधित न होना पड़े। यह बहुत आम बात है।

और अन्त में, अगर हम काफी आगे निकल जायें, अगर हम इस वर्णन को काफी आगे बढ़ा सकें तो, जब तक सत्ता का कोई भाग ऐसा है जो भगवान् के लिए केन्द्रीय अभीप्सा का विरोध करता है, तब तक तुम पूरी तरह सच्चे नहीं हो। यानी, पूरी सच्चाई या निष्कपटता एक बहुत ही विरल चीज है। और आमतौर पर, बहुधा, जब आदमी की प्रकृति में ऐसी चीजें होती हैं जिन्हें वह पसन्द नहीं करता, तो वह बहुत सावधानी से उन्हें अपने-आपसे छिपाता है, उनके लिए अनुकूल सफाई दे देता है या फिर बस, जरा-सी गति करता है, यूं (संकेत)। तुमने देखा है कि जब चीजें इस तरह गति करती हैं तो तुम उन्हें स्पष्ट नहीं देख सकते। जहां दोष दुबका होता है वहां एक प्रकार का स्पन्दन होता है जो यह करता है और तुम्हारी दृष्टि स्पष्ट नहीं रहती, फिर तुम अपने दोष नहीं देख पाते। और यह स्वतः होता रहता है। ये सब कपट हैं।

पूर्ण सच्चाई और निष्कपटता तब आती है जब सत्ता के केन्द्र में भगवान् की 'उपस्थिति' की चेतना रहती है, भागवत 'इच्छा' की चेतना रहती है, और जब सारी सत्ता अपने सभी ब्योरों में प्रकाशमान, स्पष्ट, पारदर्शक इकाई के रूप में इस बात को प्रकट करती है। वास्तव में यही सच्ची निष्कपटता है।

जब, किसी भी समय, चाहे कुछ भी हो, सत्ता अपने-आपको पूरी तरह भगवान् के प्रति अर्पित रखे और केवल भागवत 'इच्छा' को ही चाहे, जब सत्ता में चाहे कुछ भी क्यों न हो रहा हो, किसी भी क्षण क्यों न हो, हमेशा, समग्र सत्ता पूर्ण ऐक्य के साथ भगवान् से कह सके और भगवान् के लिए अनुभव करेः ''तेरी 'इच्छा' पूरी हो'', जब यह सहज, समग्र, पूर्ण हो तब तुम निष्कपट हो। लेकिन जब तक यह प्रतिष्ठित न हो जाये तब तक यह मिश्रित सच्चाई रहती है, कम या अधिक मिश्रित, वहां तक मिश्रित रहती है जहां तक तुम बिलकुल सच्चे नहीं होते।

CWM 6: 450

सच्चाई — एक सुरक्षा

डरो मत, तुम्हारी सच्चाई तुम्हारी सुरक्षा है।

CWM 14: 66

सरल सचाईः समस्त प्रगति का आरम्भ।

CWM 14, p. 66

एक सच्चा हृदय विश्व में सभी असाधारण शक्तियों के बराबर है।

CWSA 28 : 577

चालाक होने की अपेक्षा बिलकुल निष्कपट होना ज्यादा अच्छा है।

CWM 16: 26

अपने आध्यात्मिक लक्ष्य तक पहुंचने के लिए सच्चे बनो, यानी उसे ही अपने जीवन का एकमात्र उद्देश्य बनाओ।

CWM 14: 66

पूरी तरह सच्चे बनो और कोई विजय तुम्हारे लिए दुर्लभ न होगी।

CWM 14 :66

सच्चाई में विजय की निश्चिति है।

सच्चाई! सच्चाई! कितनी मधुर है तुम्हारी उपस्थिति की पवित्रता!

CWM 14: 66

एकमात्र मुक्ति पूर्ण सच्चाई और सत्यवादिता में है।

CWM 14: 67

सच्चाई — दुर्लभ गुण

मुझे किस चीज का सबसे अधिक विकास करना चाहिये? और किस चीज का सबसे अधिक परित्याग?

विकास----सच्चाई (यह भगवान् के रास्ते पर पूर्ण संलग्नता है।)का
त्याग----पुरानी मानवीय आदतों के प्रति आकर्षण।

CWM 14:67

यह सोचने का कोई फायदा नहीं कि हम बहुत सच्चे हैं। यह सोचना भी बेकार है कि हम सच्चे नहीं हैं। उपयोगी है सच्चे बनना।

CWM 14:69

इस जगत् में सच्चाई इतना दुर्लभ गुण है कि यदि कोई इसे देखे तो उसे इसके सामने आदर के साथ सिर झुका देना चाहिये। ''सच्चाई '', जिसे हम सच्चाई कहते हैं, अर्थात्, पूर्ण ईमानदारी और पारदर्शकताः अर्थात् कहीं कोई चीज ऐसी नहीं होनी चाहिये जो झूठा दावा करती हो, अपने को छिपाती हो अथवा जो कुछ वह नहीं है वैसी स्वीकृत होना चाहती हो।

CWM 8, p. 89

सद्‌गुणों का उत्सव

एक समय की बात है। एक भव्य महल था, जिसके बीचो-बीच एक गुप्त मन्दिर था। किन्तु आज तक उसकी देहली भी किसी ने पार नहीं की थी। और तो और, उसकी बाहरी चहारदीवारी तक भी पहुंचना मर्त्य प्राणियों के लिए प्रायः असम्भव था, क्योंकि महल ऊंचे बादलों पर खड़ा था और आदिकाल से विरले ही वहां का मार्ग ढूंढ़ने में समर्थ हुए थे।

यह था 'सत्य' का महल।

एक दिन, वहां एक उत्सव का आयोजन हुआ, मनुष्यों के लिए नहीं वरन् उनसे अत्यन्त भिन्न प्रकार की सत्ताओं के लिए। इसमें वे छोटे-बड़े देवी-देवता आमन्त्रित थे जो इस पृथ्वी पर 'सद्‌गुणों' के नाम से पूजे जाते हैं।

उस महल के बाहरी भाग में एक बहुत बड़ा कक्ष था। उसकी दीवारें, फर्श और छत स्वतः प्रकाशमान थीं, पर हजारों अग्नि-स्फुलिंगों से और भी जगमगा रही थीं।

यह था 'बुद्धि का महाकक्ष'। यहां फर्श के पास प्रकाश बहुत हल्का था, और नीलमणि के रंग का अति सुन्दर गहरा नीला रंग छत की ओर अधिकाधिक तेज होता गया था। छत में हीरों के दीपवृक्ष झाड़-फानूसों की तरह लटके हुए थे। उनके हजारों मुखों से आंखों को चौंधियाने वाली किरणें चारों ओर बिखर रही थीं।

सद्‌गुण अलग-अलग आये पर शीघ्र ही अपनी-अपनी रुचि के अनुसार टोलियां बना कर बैठ गये। सभी प्रसन्न थे कि आज ऐसा दिन आया जब वे एक बार तो इकट्ठे हो सके। वे साधारणतः इस जगत् में और अन्य जगतों में बिखरे रहते हैं, परायों की भीड़ में छितरे रहते हैं।

इस उत्सव की अध्यक्षता की 'दिल की सच्चाई ' ने जिसका वेश जल के समान निर्मल था, उसके हाथों में एक घनाकार, अति विशुद्ध स्फटिक था। उस स्फटिक से वस्तुएं वैसी दिखलायी देती थीं जैसी वे वास्तव में थीं, जैसी वे साधारणतया प्रतीत होती हैं उससे सचमुच में बहुत ही भिन्न, क्योंकि उसमें वस्तुएं हूबहू, बिना किसी विकृति के प्रतिबिम्बित होती थीं।

उसके पास ही दो मूर्तियां विश्वस्त अंगरक्षकों की तरह खड़ी थीं; एक थी 'विनम्रता', उसका भाव आदरपूर्ण और साथ ही गर्वीला था, और दूसरी ओर उन्नत ललाट, उज्ज्वल चक्षु, दृढ़ हास्यपूर्ण अधर, प्रशान्त, निश्चिन्त भंगिमावाला 'साहस' था।

CWM 2: 5-6

अपरिहार्य गुण

मधुर मां, आपने ''सद्गुणों'' की जो कहानी लिखी है उसमें आपने कई सद्गुणों का वर्णन किया है। उनमें से कौन-सा गुण सबसे अधिक जरूरी है?

सच्चाई और निष्कपटता।

CWM 16: 387

सच्चाई विशेष रूप से आध्यात्मिक प्रयास के लिए अपरिहार्य तथा कुटिलता एक निरन्तर बाधा है।

CWSA 29: 42

शाश्वत चेतना के सामने सच्चाई की एक बूंद का मूल्य पाखण्ड और ढोंग के सागर से बढ़कर है।

CWM 16: 69

सच्चाई या पारदर्शिता

श्रीमां अपने हाथ में सफेद चम्पा पुष्प लिये हुए हैं और उसे दिखा रही हैं। उस फूल का नाम उन्होंने ''आन्तरिक परिपूर्णता'' दिया है।

जो भी हो, जो चीज उसमें सर्वदा रहती है, जो सभी समवायों में होती है और चाहे जिस किसी को मैं यह फूल दूं, उनमें सर्वप्रथम है सच्चाई । कारण, यदि सच्चाई न हो तो मनुष्य आधा पग भी आगे नहीं बढ़ सकता।

परन्तु इसे एक दूसरे शब्द के द्वारा अनूदित करना सम्भव है, यदि कोई पसन्द करे, और वह होगा ''पारदर्शिता''। मैं इस शब्द की व्याख्या कर दूं:

कोई व्यक्ति मेरे सामने उपस्थित है और मैं उसकी ओर देखती हूं; मैं उसकी आंखों में देखती हूं। और यह व्यक्ति यदि सच्चा अथवा ''पारदर्शक'' होता है तो उसकी आंखों के द्वारा मैं उसके अन्दर पैठ जाती हूं और उसकी अन्तरात्मा को देखती हूं----स्पष्ट रूप में। परन्तु----ठीक यही अनुभव होता है----जब मैं किसी व्यक्ति की ओर निहारती हूं और कभी-कभी थोड़ा-सा मेघ देखती हूं, तब मैं आगे

बढ़ती हूं, मैं एक पर्दा देखती हूं, और फिर, कभी-कभी वहां एक दीवार होती है और उसके बाद वहां कोई बिलकुल काली चीज होती है; और इन सबको पार करना होता है और छिद्र बनाने होते हैं जिनमें से होकर और आगे बढ़ा जाये; और उसके बाद भी मैं सुनिश्चित नहीं होती कि अन्तिम क्षण में मेरे सम्मुख कोई कांसे का दरवाजा नहीं उपस्थित हो जायेगा जो इतना मोटा होगा कि मैं उसके पार कभी नहीं जा सकूंगी और न उसकी अन्तरात्मा को देख सकूंगी; तब, ऐसे व्यक्ति के विषय में मैं तुरत कह सकती हूं कि वह सच्चा नहीं है। परन्तु मैं शब्दशः यह भी कह सकती हूं कि वह पारदर्शक नहीं है। यह है पहली चीज।

...अतएव, यहां मेरा प्रस्ताव हैः हम समर्पण को रखते हैं सबसे पहले, सबसे ऊपर, अर्थात्, हम श्रीअरविन्द की कही हुई बात स्वीकार करते हैं कि, पूर्णयोग की साधना करने के लिए व्यक्ति को सबसे पहले भगवान् के प्रति पूर्ण रूप से समर्पण करने का संकल्प करना चाहिये, दूसरा कोई पथ नहीं है, यही है 'एकमात्र पथ'। परन्तु उसके बाद मनुष्य के अन्दर ये पांच आन्तरिक गुण, पांच आन्तरिक परिपूर्णताएं अवश्य होनी चाहियें और हम कहते हैं कि ये परिपूर्णताएं हैंः

सच्चाई या पारदर्शिता

श्रद्धा या विश्वास (स्वभावतः भगवान् में विश्वास)

भक्ति या कृतज्ञता

साहस या अभीप्सा

सहिष्णुता या अध्यवसाय

सहिष्णुता का एक रूप है 'विश्वासपात्रता'। अपने संकल्प के प्रति वफ़ादारी, विश्वासपात्र बनना। तुमने एक संकल्प किया है, तुम अपने संकल्प के प्रति वफ़ादार बने रहते हो। यही है सहिष्णुता।

बस, इतना ही। यदि तुम डटे रहते हो तो फिर एक क्षण ऐसा आता है जब तुम विजयी होते हो।

विजय उसी की होती है जो सतत प्रयत्नशील होता है।

CWM 8: 36-38, 42

सच्चाई और धैर्य

सच्चाई का अर्थ है केवल ईमानदारी से कहीं कुछ अधिक। इसका अर्थ है कि जो तुम कहते हो वही तुम्हारा आशय भी है, जो तुम दावा करते हो वही तुम महसूस भी करते हो और अपने संकल्प के प्रति गंभीर हो। जिस प्रकार साधक भगवान का यंत्र बनने के लिए अभीप्सा करता है, तब उसके

अन्दर सच्चाई का अर्थ यह है कि वह सचमुच अपनी अभीप्सा में गंभीर है तथा भगवान के संकल्प को छोड़ कर अन्य समस्त संकल्प तथा आवेग को अस्वीकार करता है।

CWSA 29: 50

योग में अन्ततोगत्मा एक चीज जिसका महत्व है वह है सच्चाई और इसके साथ ही पथ पर दृढ़ बने रहने के लिए धैर्य – बहुत से ऐसे लोग हैं जो बिना धैर्य के भी पथ को पार कर लेते हैं, क्योंकि – पुनः मैं व्यक्तिगत अनुभव से कहता हूँ – विद्रोह, अधीरता, अवसाद, निराशा, थकावट, अस्थायी अविश्वास के बावजूद हमारे बाहरी व्यक्तित्व से महत्तर एक शक्ति, आत्मन की शक्ति, आत्मा की आवश्यकता की प्रेरणा, बादल तथा कोहरे से पार उन्हें धकिया कर लक्ष्य के सामने तक ले जाती हैं। अपूर्णताएं बाधक हो सकती हैं और व्यक्ति को क्षण भर के लिए नीचे गिरा सकती हैं, किन्तु वे स्थायी बाधक नहीं हैं। प्रकृति में कुछ प्रतिरोध से उत्पन्न धुंधलापन बिलम्ब के लिए अधिक गम्भीर कारण हो सकते हैं, किन्तु वे भी हमेशा के लिए नहीं बने रहते।

CWSA 31 : 661

सच्चे बनो, हमेशा सच्चे बनो, अधिकाधिक सच्चे बनो।

सच्चाई हर एक से यह मांग करती है कि वह अपने विचारों, अपने भावों, अपनी अनुभूतियों और अपने कर्मों में अपनी सत्ता के केन्द्रीय सत्य के सिवा और कुछ न प्रकट करे।

CWM 15: 211

अगर तुम सच्चे और पूरी तरह ईमानदार हो तो मेरी सहायता निश्चित रूप से तुम्हारे साथ होगी और एक दिन तुम उसे जान पाओगे।

CWM 12 :339

आरम्भ करने के लिए तीन अनिवार्य चीजें:

समस्त सत्ता और उसके सारे क्रियाकलाप में सम्पूर्ण सच्चाई और निष्कपटता। कुछ भी बचाये बिना पूर्ण आत्म-समर्पण।

अपने ऊपर धीरज के साथ काम करना और साथ ही पूर्ण, निष्कम्प शान्ति और समता को निरन्तर हस्तगत करते रहना।

CWM 14 : 41

सत्यनिष्ठा प्रगतिशील है

''क्या कोई मानसिक सच्चाई, कोई प्राणिक सच्चाई , कोई भौतिक सच्चाई है? इन सच्चाइयों में क्या भेद है?

स्वभावतः ही, सच्चाई का तत्त्व सर्वत्र एक ही है, पर सत्ता की अवस्थाओं के अनुसार उसकी क्रिया अलग-अलग है। पहले प्रश्न का जहां तक सम्बन्ध है, हम केवल यह उत्तर दे सकते हैंः नहीं, कदापि नहीं, यदि मनुष्य वही बना रहे जो वह है। परन्तु उसमें पूर्णतः सच्चा होने के लिए अपने-आपको पर्याप्त मात्रा में रूपान्तरित करने की सम्भावना है।

सर्वप्रथम, यह कहा जा सकता है कि सच्चाई या सत्यनिष्ठा प्रगतिशील है, और जैसे-जैसे सत्ता प्रगति करती और विकसित होती है, जैसे-जैसे विश्व अभिव्यक्ति के अन्दर उद्घाटित होता है, वैसे-वैसे सत्यनिष्ठा को भी अनन्त रूप से पूर्ण बनाते जाना चाहिये। इस विकास-क्रम का प्रत्येक ठहराव आवश्यक रूप से बीते कल की सच्चाई को भावी कल की अ-सच्चाई या कपट में परिणत कर देता है।

पूर्णतः सच्चा होने के लिए यह आवश्यक है कि कोई पसन्दगी, कोई कामना, कोई आकर्षण, कोई नापसन्दगी, कोई सहानुभूति या विद्वेष, कोई आसक्ति, कोई विकर्षण न हो। हमें वस्तुओं का एक पूर्ण, सर्वांगीण अन्तर्दर्शन प्राप्त हो जिसमें प्रत्येक वस्तु अपने स्थान पर हो और सभी वस्तुओं के प्रति हमारा एक ही मनोभाव, सत्य-दर्शन का मनोभाव हो। मनुष्य के लिए यह कार्यक्रम पूरा करना स्पष्ट ही बहुत कठिन है। जब तक वह स्वयं को दिव्य रूप में रूपान्तरित करने का निश्चय नहीं कर लेता, उसका अपने अन्दर की इन सभी विपरीत वस्तुओं से मुक्त होना लगभग असम्भव प्रतीत होता है। और फिर भी, जब तक वह अपने अन्दर उन्हें वहन करता है, वह पूर्ण रूप से सत्यनिष्ठ नहीं हो सकता। अपने-आप ही मानसिक, प्राणिक और यहां तक कि भौतिक क्रियावली मिथ्या बन जाती है। मैं भौतिक पर जोर दे रही हूं, क्योंकि इन्द्रियों की क्रिया भी दोषपूर्ण हो जाती हैः जब तक मनुष्य में कोई पसन्दगी होती है, वह वस्तुओं को उनके सत्य-रूप में नहीं देखता, नहीं सुनता, नहीं चलता, नहीं अनुभव करता। जब तक ऐसी चीजें हैं जो तुम्हें अच्छी लगती हैं और ऐसी चीजें हैं जो अच्छी नहीं लगतीं, जब तक तुम किन्हीं विशेष वस्तुओं से आकर्षित होते और दूसरी वस्तुओं से विकर्षण का अनुभव करते हो, तुम वस्तुओं को उनके सत्य-स्वरूप में नहीं देख सकते; तुम उन्हें अपनी प्रतिक्रियाओं, अपनी पसन्दगी या नापसन्दगी में से देखते हो। इन्द्रियां माध्यम हैं जो

अव्यवस्थित हो जाती हैं, ठीक जिस तरह संवेदनाएं, हृद्‌गत भावनाएं और विचार हो जाते हैं। अतः, तुम जो कुछ देखते, जो कुछ स्पर्श करते, जो कुछ अनुभव करते और सोचते हो उसके बारे में निस्सन्दिग्ध होने के लिए तुम्हारे अन्दर एक प्रकार की पूर्ण अनासक्ति होनी चाहिये; और स्पष्ट ही यह कोई आसान काम नहीं है। परन्तु उस क्षण तक तुम्हारा ज्ञान पूरी तरह सही नहीं हो सकता और इस कारण वह सच्चा नहीं है।

स्वाभाविक है कि यह सर्वोच्च अवस्था है। परन्तु कुछ स्थूल अ-सच्चाइयां या कपट भी हैं जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति समझता है और जिन पर, मैं समझती हूं, जोर देना जरूरी नहीं है, उदाहरणार्थ, कहना एक बात और सोचना दूसरी बात, एक काम करने का दिखावा करना और सचमुच में करना दूसरा, एक ऐसी इच्छा प्रकट करना जो तुम्हारी सच्ची इच्छा नहीं है। मैं बिलकुल भयंकर झूठों की, तथ्य से भिन्न किसी दूसरी बात को कहने की चर्चा नहीं कर रही, बल्कि कार्य करने की वह कूटनीतिक विधि, कार्य के द्वारा कोई चीज सिद्ध करने की भावना के साथ कार्य करना, कोई बात कहना और उससे कोई विशेष प्रभाव की आशा करना, इस प्रकार का प्रत्येक मिश्रण जो स्वाभाविक रूप में तुमसे स्वयं अपना ही खण्डन कराता है, वह सब भी एक प्रकार का काफी स्थूल कपट है जिसे हर एक आसानी से पहचानता है।

परन्तु कुछ दूसरे अधिक सूक्ष्म कपट हैं और उन्हें पहचानना अधिक कठिन है। जैसे, तुम्हारे अन्दर जब तक सहानुभूतियां और विद्वेष-भावनाएं हैं तब तक बिलकुल स्वाभाविक रूप में तथा मानों स्वतःस्फूर्त रूप में, अपनी अनुकूल चीज के विषय में तो तुम्हारा अनुकूल मत होगा, और अपनी नापसन्द चीज के विषय में प्रतिकूल। और ऐसी स्थिति में भी सच्चाई का अभाव खूब स्पष्ट होगा। परन्तु हो सकता है कि तुम अपने को धोखा दो और यह न देख सको कि तुम झूठे हो। तब उस स्थिति में मानों तुम्हें मानसिक कपट का सहयोग प्राप्त होता है। कारण, यह सच है कि सत्ता की या सत्ता के अंगों की अवस्था के अनुसार थोड़े-से भिन्न-भिन्न प्रकार के कपट हैं। केवल इन कपटों का मूलस्रोत सर्वदा एक ही क्रिया होती है जो कामना तथा व्यक्तिगत प्रयोजनों की प्राप्ति की चेष्टा से----अहंभाव से, अहंभाव से उत्पन्न सभी सीमाओं एवं कामना से उत्पन्न सभी विकृतियों के सम्मिश्रण से उत्पन्न होती है।

.... सच्चाई सभी सच्ची सिद्धियों का आधार है, वह साधन है, पथ है----और यह लक्ष्य भी है। इसके बिना तुम निश्चय ही अनगिनत भूलें करोगे और तुम्हें निरन्तर उस हानि का प्रतिकार करते रहना होगा जो तुमने अपने प्रति और दूसरों के प्रति की है।

इसके अलावा, सच्चा होने में एक अद्‌भुत आनन्द है। सच्चाई का प्रत्येक कार्य अपने-आपमें अपना प्रतिदान लेकर आता हैः पवित्रता की, ऊपर की ओर उड़ान भरने की, उस मुक्ति की भावना ले आता है जिसे मनुष्य तब पाता है जब वह मिथ्यात्व के एक छोटे-से कण को भी त्याग देता है। सत्यनिष्ठा ही रक्षोपाय है, संरक्षण है, पथ-प्रदर्शक है, और अन्त में रूपान्तरकारिणी शक्ति है।

CWM 8: 474-76

अपनी सत्ता के सत्य को नकारने के लिए कहीं भी, कुछ भी स्वीकार नहीं करना : यही है सच्चाई।

Mother's conversation recorded by a disciple, 17.10.1958

सच्चाई और समर्पण

जब व्यक्ति अन्तरात्मा का द्वार पूरी तरह से खोल लेता है तथा सचेतन रूप में उसमें प्रवेश कर जाता है, भगवान् के साथ पूर्ण, समग्र, सर्वांगीण सम्बन्ध स्थापित कर लेता है, जब उसे ऐसा प्रतीत होने लगता है कि उसने एक नया जीवन प्राप्त कर लिया है, वह एक दूसरी ही सत्ता बन गया है, अब वह किसी चीज को उसी पुराने ढंग से नहीं देखता, किसी चीज को उसी पुराने ढंग से अनुभव नहीं करता — केवल तभी वह निकट से, गहराई में और पूर्ण रूप से यह जान पाता है कि दिव्य जीवन क्या है। इसके बाद यदि द्वार पुनः बन्द हो भी जाये तो भी व्यक्ति के पास उसकी ठीक-ठीक स्मृति बची रहती है। इसी ढंग से यह दिखायी देती है। तब भूल करना असम्भव हो जाता है। यह बिलकुल भिन्न चीज है, इसकी कोई बराबरी नहीं, बिलकुल नहीं, इसकी किसी चीज से तुलना नहीं की जा सकती। यह एक अद्वितीय और अपने-आपमें पूर्ण वस्तु है। इसीलिए मैंने तुमसे पूछा थाः ''क्या तुम इसमें भेद कर सकते हो?'' कारण, यदि तुममें से किसी एक को यह अनुभूति प्राप्त हो चुकी हो तो वह इस प्रकार जान लेता है कि कौन-सी वस्तु भगवान् से आयी है, और यदि वह निश्चित और पूर्ण रूप से उस वस्तु को जान लेता है जो भगवान् से आती है तो वह उन सबको भी अवश्य जान लेगा जो उनसे नहीं आती। इसीलिए मैंने तुमसे पूछा था। यदि तुममें से एक भी सच्चाई के साथ मुझसे कह सकताः ''मुझे यह अनुभूति हो चुकी है और मैं जानता हूं,'' तो मुझे बहुत प्रसन्नता होती। किन्तु यह बात उपर्युक्त अनुभूति के बाद ही जानी जा सकती है, उससे पहले नहीं। इसीलिए, यदि व्यक्ति सचमुच प्रगति करना चाहता है तो उसे प्रत्येक पग पर अपने से यह पूछना होगा और इस बात का निश्चय करना होगा कि यह प्रभाव कहां से आया हैः

''यह सुझाव किसने मुझे दिया है? क्या यह मेरी सत्ता का ही एक भाग है अथवा बाहर की कोई वस्तु? क्या यह भगवान् की ओर से आयी है?''

किन्तु इस अनुभूति को प्राप्त करने से पहले व्यक्ति अपने-आप ही निर्णय नहीं कर सकता। स्वाभाविक है कि यदि व्यक्ति का समर्पण वास्तविक रूप में सच्चा है और सत्ता में निरन्तर यह मनोभाव रहता है, भगवान् के प्रति पूर्ण आत्मदानः ''तेरी इच्छा पूर्ण हो,'' तो इस तरह वह बिना जाने, बिना समझे-बूझे, सहज प्रेरणावश उसी वस्तु को चुन सकता है जिसे चुनना चाहिये और जिसे नहीं चुनना चाहिये उसे अस्वीकार कर सकता है। किन्तु यह एक सहज प्रवृत्ति, स्वचालित-सी क्रिया बन जाती है, पर केवल तभी जब तुम्हारा समर्पण पूर्ण हो। समर्पण का यही लाभ है, क्योंकि तब तुम ठीक कार्य, ठीक ढंग से, सहज भाव में कर सकते हो, ज्ञान प्राप्त करने से पहले ही।

किन्तु जैसा कि श्रीअरविन्द ने कहा है, व्यक्ति को पूर्ण आज्ञाकारिता की ऐसी अवस्था में होना चाहिये जो प्रश्न नहीं पूछती, वाद-विवाद नहीं करती और सहज भाव से आज्ञा का पालन करती है, पथप्रदर्शन के अनुसार ठीक-ठीक कार्य करती है। उसके विचार और प्राण में कोई भी वस्तु विद्रोह न करे, न विरोध या शंका ही करे या अपने को ठीक ठहराने की कोशिश करे, और न ही वह अपने आगे (कभी-कभी भगवान् के भी आगे) यह प्रमाणित करने की कोशिश करे कि वह सच्चा है, उसका किया कार्य ठीक है। यह सब समाप्त होना चाहिये।

मुख्य बात यह है कि व्यक्ति किसी भी मार्ग का अनुसरण करे----चाहे वह मार्ग समर्पण का हो या आत्मदान का अथवा ज्ञान का----व्यक्ति यदि उसे पूर्ण बनाना चाहता है तो वह सदा औरों के जितना ही कठिन होता है, और इसकी विधि एक ही है, केवल एक, मैं तो एक ही जानती हूंः वह है पूर्ण सच्चाई , लेकिन सच्चाई पूर्ण हो!

पूर्ण सच्चाई कठिन है

क्या तुम्हें पता है कि पूर्ण सच्चाई किसे कहते हैं?

अपने-आपको कभी धोखा देने की कोशिश न करो, सत्ता का कोई भी भाग दूसरों को विश्वास दिलाने का उपाय ढूंढ़ने की कोशिश न करे। जो कुछ तुम करना चाहते हो उसे करने के लिए बहाने ढूंढ़ने की खातिर चिकनी-चुपड़ी बातें मत करो, कोई वस्तु यदि तुम्हें अच्छी न लगती हो, तो उसकी

तरफ से आंखें मत मूंद लो, किसी वस्तु को अपने सामने से यह कहते हुए मत गुजरने दोः ''इसका कुछ महत्त्व नहीं, अगली बार ज्यादा अच्छा होगा।''

ओह! यह सब अत्यधिक कठिन है। घण्टे-भर के लिए ऐसा करने की कोशिश करो तो तुम देखोगे कि यह कितना कठिन है! केवल एक घण्टा, पूर्णतः, निरपेक्ष भाव से निष्कपट बने रहना। कुछ भी छूटे नहीं। अर्थात्, जो भी करो, जो कुछ भी अनुभव करो, जो कुछ भी सोचो, जो कुछ भी चाहो, सब अनन्य भाव से भगवान् ही हों।

''मैं भगवान् के सिवाय कुछ नहीं चाहता, मैं भगवान् के सिवाय अन्य किसी वस्तु के सम्बन्ध में नहीं सोचता, मैं केवल वही करता हूं जो मुझे भगवान् की ओर ले जाता है, मैं भगवान् के सिवाय और किसी वस्तु से प्रेम नहीं करता।''

कोशिश करो----कोशिश करो और देखो, केवल आधे घण्टे के लिए ही, और तुम देखोगे कि यह कितना कठिन है! और उस समय इस बात का ध्यान रखो कि वहां मन, प्राण या भौतिक सत्ता का कोई भी भाग आराम से छिपा तो नहीं बैठा है, पीठ-पीछे, ताकि तुम उसे देख न सको (मां अपने हाथ पीठ-पीछे छिपा लेती हैं), और यह न जान सको कि वह कार्य में सहयोग नहीं दे रहा ---- वह वहां चुपचाप बैठा है ताकि तुम उसे बाहर न ला सको --- वह कुछ कहता नहीं, पर बदलता भी नहीं, छिपा पड़ा रहता है। ऐसे कितने भाग! कितने ही भाग अपने-आपको छिपाये रहते हैं! तुम उन्हें अपनी जेब में डाल लेते हो, क्योंकि तुम उन्हें देखना नहीं चाहते, अथवा वे तुम्हारी पीठ के पीछे ठीक बीचो-बीच अच्छी तरह छिप कर बैठे रहते हैं, ताकि दिखायी न दें। जब तुम वहां अपनी टॉर्च के साथ ---- सच्चाई की टॉर्च के साथ ---- जाते हो और सब कोनों, छोटे-छोटे कोनों में भी ढूंढ़ते हो तो जो कोने इस बात से सहमत नहीं होते, जो वस्तुएं ''न'' कहती हैं अथवा अपनी जगह से हिलना-डुलना नहीं चाहतीं, वे कहती हैंः ''मैं नहीं हिलूंगी; मैं अपनी जगह से चिपकी रहूंगी, कुछ भी मुझे टस-से-मस नहीं कर सकता...।'' तुम्हारे पास एक टॉर्च होती है, और तुम उस चीज पर, उन सब पर प्रकाश फेंकते हो। तुम देखोगे कि वहां ऐसी अनेक वस्तुएं हैं, पीठ के पीछे अच्छी तरह चिपकी हुईं।

कोशिश करो, केवल एक घण्टे के लिए, कोशिश करो!

CWM 6 : 131-33

स्वांग मत करो

अपनी कमजोरी को देखना सच्चाई का एक परिणाम है।

CWSA 29: 53

समस्त सत्ता का चैत्य केन्द्र के चारों ओर पूर्णतः एकरूप हो जाना ही पूर्ण सच्चाई प्राप्त करने की आवश्यक शर्त है।

CWM 15: 207

प्रत्येक वस्तु के लिए----मैं इसे हमेशा तुम्हारे सामने दोहराऊंगी यदि मेरे पास समय हो — प्रत्येक वस्तु के लिए, मनुष्य में पूर्ण सच्चाई अवश्य होनी चाहिये।

CWM 4: 131

अपनी अभीप्सा को स्थिर रखना और अपने-आपको पूरी सच्चाई के साथ देखना बाधाओं पर विजय पाने के निश्चित उपाय हैं।

CWM 14: 254

व्यक्ति ने जिस जीवन का चुनाव कर लिया है उसका यापन उसे कैसे करना चाहिये ?

सच्चा बनो

White Roses by Huta, p.164

जो गम्भीर और सच्चे होते हैं उनके साथ भगवान हमेशा रहते हैं।

*

भगवान् हमेशा उनके साथ होते हैं जो उत्साही और सच्चे हैं।

CWM 14: 66

तुम जो कुछ अर्पित करोगे श्रीमाँ स्वीकार करेंगी क्योंकि वे अत्यधिक कठोर होना नहीं चाहतीं। परन्तु तुम्हारी समस्त सत्ता में एक पूर्ण सच्चाई की वे तुमसे मांग करती हैं।

Bulletin , August 2001, 68

आज सवेरे प्रणाम के बाद आपने मुझे सच्चाई के चार फूल देकर आशीर्वाद दिया। मुझे लगता है कि इसका कुछ विशेष अर्थ है, लेकिन मैं उसे जान नहीं सका। क्या आप बताने की कृपा करेंगी?

जब मैंने तुम्हें देने के लिए फूल उठाये तो मुझे लगा कि कई फूल आ रहे हैं तो मैंने इच्छा की ''यह सत्ता के उन स्तरों की संख्या हो जिनमें सच्चाई (भगवान् के प्रति निवेदन में सच्चाई) निश्चित रूप से स्थापित होगी।'' चार का अर्थ है पूर्णता, सत्ता की चार अवस्थाएंः मानसिक, चैत्य, प्राणिक और भौतिक।

CWM 15 : 36-37

आपका पत्र पाने तथा उसके आवरण पर सच्चाई पुष्प देखने के बाद मैं थोड़ा उदास हो गया। यह सच्चाई पुष्प क्यों? इसे क्यों भेजा गया? मुझमें क्या कपट या पाखण्ड है?...'' बाद में मैंने प्रणाम के लिए आने की थोड़ी-सी अनिच्छा महसूस की।

सच्चाई पुष्प का उस घटना से कुछ लेना-देना नहीं था। आज प्रातःकाल यह पुष्प हरेक को भेजा गया। पुष्प किसी कमी की ओर संकेत करें यह आवश्यक नहीं है — वे केवल उस शक्ति को वहन करते हैं जिसका वे संकेत करते हैं।

Bulletin , April 2005, 80

एक दिन मैं काफी शान्ति और आनन्द का अनुभव कर रहा था। मैंने ध्यान करते समय अन्तर्दृष्टि में आपको देखा, इसके बाद साथ ही सच्चाई पुष्प दिखाई पड़ा। लेकिन सोने के लिए ध्यान मुझे बन्द करना पड़ा क्योंकि, मैंने सोचा, यदि रात्रि में जागता रहा तब हो सकता है मैं बीमार पड़ जाऊँ। क्या उस पुष्प विशेष का कोई महत्व है?

हाँ, इसमें विशेष महत्व था। यह सच्चाई के लिए अभीप्सा करने का तुम्हारा आह्वान था। सच्चाई का तात्पर्य है अपनी सभी गतियों को भगवान की ओर ऊपर उठाना।

Talks with Sri Aurobindo by Nirodbaran, Vol. I, p.61

श्रीमाँ : ''सरल सच्चाई में हर चीज समाविष्ट है। यह शक्ति, ज्योति, ज्ञान, अनुभूति, रूपान्तर — हर चीज की ओर ले जाती है। परन्तु इसे समग्र होना चाहिये, सत्ता के सभी भागों में।''

चम्पक लाल : ''कैसे कहना चाहिये?''

श्रीमाँ : इसे सहन भाव से, अनायास आना चाहिये ।

चम्पक लाल : ''उसे कैसे जानें?''

श्रीमाँ : ''उचित सोच, उचित विधि, सच्ची और सतत प्रार्थना। परिणाम से निर्णय करो।''

Champaklal Speaks, p. 220

आध्यात्मिक उपलब्धि के लिए अटल सच्चाई और निष्कपटता ही सबसे अधिक निश्चित मार्ग है।

स्वांग मत करो, बनो।

वचन मत दो, करो।

सपने मत देखो, चरितार्थ करो।

CWM 14 :72

सच्चाई के बिना कुछ भी नहीं किया जा सकता। सम्पूर्ण सच्चाई के साथ सब कुछ सम्भव है।

CWM 16: 428

केवल वही जो पहले से ही काफी सच्चे हैं यह जानते हैं कि वे पूरी तरह सच्चे नहीं हैं।

*

हम सभी विपरीत मतों के बावजूद सच्चे होना चाहते हैं; सच्चाई हमारी सुरक्षा है।

CWM 14: 67

केन्द्रीय सच्चाई क्या है?

यह बहुत बड़ा सवाल है। तुम कह सकते हो कि यह केन्द्रीय सत्ता में कुछ ऐसी चीज है जो आह्वान को बनाये रखती है। पथ से भटकन और भूलें हो सकती हैं परन्तु यदि केन्द्रीय सत्ता वहाँ है तब मनुष्य सही मार्ग पर वापस आ जाता है। वैसी केन्द्रीय सच्चाई सत्य को पाने के लिए आवश्यक शर्त है।

Evening Talks with Sri Aurobindo by A. B. Purani, p. 331-32

इस योग में सफलता की शर्तें क्या हैं?

मैंने प्रायः ही इनके बारे में बताया है। जो लक्ष्य तक चले जाते हैं उनमें केन्द्रीय सच्चाई होती है। इसका अर्थ यह नहीं कि सत्ता के सभी भागों में सच्चाई है। उस अर्थ में कोई भी पूरी तरह तैयार नहीं है। परन्तु केन्द्रीय सच्चाई है तब सत्ता के सभी भागों में इसे स्थापित करना सम्भव है... ।

Evening Talks with Sri Aurobindo by A. B. Purani, p. 361

जीवन का सच्चा उद्देश्यः

भगवान् के लिए जीना या 'सत्य' के लिए जीना या कम-से-कम अपनी अन्तरात्मा के लिए जीना।
और सच्ची निष्कपटता----
भगवान् से बदले में किसी लाभ की आशा किये बिना 'उनके' लिए जीना।

CWM 14 : 4

पारदर्शक सच्चाई

पारदर्शक सच्चाई का क्या मतलब है?

सच्चाई की तुलना वातावरण या कांच के एक तख्ते से की गयी है। इनमें से कोई अगर पूरी तरह पारदर्शक हो तो वह प्रकाश को विकृत किये बिना निकलने देता है।

उसी भांति सच्ची चेतना दिव्य स्पन्दनों को विकृत किये बिना अपने अन्दर से निकल जाने देती है।

CWM 16 : 430

विशुद्धता पूर्ण सच्चाई है और यह तुम्हें तब तक नहीं मिल सकती जब तक तुम पूरी तरह भगवान् के अर्पित न हो।

CWM 14 : 149

मैं महसूस कर रहा हूं कि मेरा स्वभाव अधिक जटिल, कम निष्कपट बनता जा रहा है। ऐसा क्यों है?

जैसे-जैसे मन का विकास होता है, बालक की सरल तथा शुद्ध निष्कपटता विलीन हो जाती है। उसके स्थान पर अधिक सचेतन, अधिक आध्यात्मिक निष्कपटता----चैत्य निष्कपटता----आनी चाहिये।

CWM 17 : 124

व्यक्ति को भगवान पर भरोसा रखना चाहिये और इसके साथ ही कुछ शक्तिदायक साधना करनी चाहिये --- भगवान साधना के अनुपात में नहीं बल्कि आत्मा की सच्चाई और इसकी अभीप्सा के अनुपात में फल देते हैं। (आत्मा की सच्चाई से मेरा तात्पर्य है भगवान को पाने की इसकी लालसा और उच्चतर जीवन की अभीप्सा)। चिन्ता करने का भी कोई लाभ नहीं --- ''मैं यह बनूंगा, वह बनूंगा? बल्कि यह कहो'' --- ''मैं जो चाहता हूँ वह नहीं बल्कि भगवान मुझे जो बनाना चाहते हैं वहीं बनने को तैयार हूँ'', शेष सबकुछ उसी के आधार पर होना चाहिये।

CWSA 23 : 582

यदि साधक सच्चा है तब उसमें भक्ति निश्चित रूप से होगी। योग में सच्चाई का अर्थ है केवल भगवान को ही प्रत्युत्तर देना और यदि उसमें भक्ति नहीं होगी तब वह ऐसा नहीं कर सकेगा।

CWSA 29: 53

सच्ची भक्ति गंगाजल से कहीं अधिक प्रभावकारी है।

CWM 14 : 107

आवश्यकता है पूर्ण सच्चाई की

इस समर्पण-मार्ग को यदि तुम पूर्ण रूप से और सच्चाई के साथ अपना लो तो कोई गंभीर कठिनाई या कोई खतरा नहीं रहता। प्रश्न केवल सच्चाई का है। यदि तुम सच्चे नहीं हो तो योग-साधना आरम्भ मत करो। मानवीय विषयों में धोखा-धड़ी चल सकती है, किन्तु भगवान् के साथ व्यवहार करने में धोखे के लिए कोई स्थान नहीं है। तुम इस मार्ग पर तभी निरापद होकर यात्रा कर सकते हो जब तुम ऋजु, निष्कपट तथा रोम-रोम तक में खुले हुए हो, जब तुम्हारा एकमात्र ध्येय भगवान् का साक्षात्कार करना, उन्हें पाना और उनके द्वारा परिचालित होना हो।

CWM 3: 7

आवश्यकता है पूर्ण सच्चाई की।

CWM 14: 107

कल आपने श्रीमाँ के कमाण्ड्स के बारे में कहा था। वे क्या हैं? मैं उनका पालन करने का प्रयास करना चाहता हूँ।

उनके बारे में जानकारी होनी चाहिये। तुम्हें उचित कार्य करना है तथा सच्चाई के साथ योग का अनुसरण करना है।

CWSA 32: 91-92

मैंने कभी नहीं कहा है कि यह योग एक निरापद योग है — कोई योग निरापद नहीं होता। प्रत्येक के अपने-अपने खतरे हैं जिस प्रकार मानव जीवन के प्रत्येक प्रयास में होता है। किन्तु यदि व्यक्ति में केन्द्रीय सच्चाई तथा भगवान के प्रति निष्ठा हो तब इसका अन्त तक निर्वाह किया जा सकता है। ये दो आवश्यक शर्तें हैं।

CWSA 29: 43

प्राणिक पारदर्शिता: परिवर्तन के लिए अनिवार्य।

CWM 14: 388

'सचाई' और 'निष्ठा' 'पथ' के दो रक्षक हैं।

CWM 14: 73

यदि पूरी सच्चाई के साथ हम लोग भगवान के पक्ष में रहें तब हमें जो होना चाहिये वह सब हो जाते हैं।

श्रीअरविन्द ने हमेशा यही कहा। यदि मनुष्य केवल यह जान पातेः

यदि पूरी सच्चाई के साथ — पूरी सच्चाई के साथ — वे अपने आपको भगवान को दे पाते और उनके पक्ष में रहते तब वे वही बन जाते जो उन्हें बनना चाहिये।

इसमें समय लग सकता है, विक्षोभ हो सकता है, कठिनाई आ सकती है — तुम्हें... अटल रहना होगा : ''मैं भगवान के लिए हूँ और भगवान की अभिव्यक्ति के लिए हूँ — हर चीज और किसी भी चीज के बावजूद।'' मेरे बच्चे। तब यह सर्वशक्तिमत्ता है — मृत्यु पर भी।

मैं नहीं कह रही कि यह कल ही हो जायेगा। मैं नहीं कह रही कि अभी तुरन्त हो जायेगा, किन्तु... यह सुनिश्चित है।

Mother's Conversation with a Disciple, 4.4.1972

भागवत कृपा के बारे में कोई सन्देह नहीं हो सकता। यह भी पूर्ण रूप से सत्य है कि यदि मनुष्य निष्कपट है तब वह भगवान को अवश्य प्राप्त करेगा। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि वह भगवान को तुरन्त पा लेगा, आसानी से और अविलम्ब। तुम यहीं भूल करते हो, भगवान के लिए एक अवधि निश्चित करते हो — पाँच वर्ष, छः वर्ष और यदि अभी तक अनुकूल परिणाम नहीं मिला तब सन्देह करते हो। मनुष्य केन्द्रीय रूप से सच्चा हो सकता है और फिर भी बहुत ऐसी चीजें हो सकती हैं जिन्हें सिद्धि के आरम्भ होने से पूर्व रूपान्तरित करना पड़े। उसकी सच्चाई को उसे इस योग्य बनाना होगा कि वह हमेशा अध्यवसाय करता रहे — क्योंकि यह भगवान के लिए ऐसी लालसा है जिसे कुछ भी सन्तुष्ट नहीं कर सकता, न विलम्ब, न निराशा, न कठिनाई न और कुछ।

CWSA 29: 116-17

अभीप्सा का प्रभाव

समस्त सच्ची अभीप्सा का अपना प्रभाव होता है। यदि तुम निष्कपट हो, सच्चे हो तब तुम दिव्य जीवन में विकास करोगे।

पूर्ण रूप से सच्चा होने का अर्थ है केवल भागवत सत्य की कामना करना, अपने आपको अधिक से अधिक भगवती माता को समर्पित करना, इस एक अभीप्सा को छोड़ कर समस्त व्यक्तिगत मांग तथा कामना को अस्वीकृत करना, जीवन में प्रत्येक क्रिया को भगवान को अर्पित करना तथा अहंकार रहित होकर उसे भगवान का दिया हुआ कार्य समझ कर करना। दिव्य जीवन का यह आधार है।

व्यक्ति एकदम तुरन्त ऐसा नहीं बन सकता, किन्तु यदि व्यक्ति इसकी हमेशा अभीप्सा करे और हमेशा सच्चे हृदय से तथा निष्कपट भाव से सहायता के लिए भागवती शक्ति को पुकारे तब व्यक्ति इस चेतना में अधिक से अधिक विकसित होता जाता है।

CWSA 29: 51

जो सच्चे हैं, मैं उनकी सहायता कर सकती हूं और उन्हें आसानी से भगवान् के प्रति मोड़ सकती हूं। लेकिन जहां कपट हो वहां मैं बहुत कम ही कर सकती हूं।

CWM 14: 226

व्यक्ति सच्चाई के साथ तथा आग्रहपूर्वक भगवान से जो कुछ मांगता है, भगवान उसे अवश्य देता है। यदि तब तुम आनन्द मांगते हो और इसकी मांग करते रहो, तब अन्त में यह तुम्हें अवश्य मिलेगा। एक मात्र प्रश्न यह है कि तुम्हारी मांग में मुख्य शक्ति क्या होनी चाहिये, एक प्राणिक मांग या एक चैत्य अभीप्सा जो हृदय से अभिव्यक्त हो तथा मानसिक और प्राणिक और भौतिक चेतना को अपने बारे में सूचित करे। परवर्ती महानतम शक्ति है और मार्ग को सबसे छोटा कर देता है — और इसके अतिरिक्त व्यक्ति को आज नहीं तो कल उसी मार्ग से आना है।

CWSA 29: 10

उनकी उपस्थिति

भगवान सबसे अच्छा जानते हैं और व्यक्ति को उनकी प्रज्ञा में श्रद्धा रखनी होगी और अपने आप को उनके संकल्प के अनुकूल बनाना होगा। समय की लम्बी अवधि या विलम्ब इस बात का प्रमाण नहीं है कि लक्ष्य तक पहुंचने में हमेशा के लिए व्यक्ति असमर्थ है — यह केवल इस बात का संकेत है कि व्यक्ति में कुछ ऐसी चीज है जिसे विजित करना होगा। और यदि भगवान तक जाने का संकल्प है तब उस पर विजय प्राप्त की जा सकती है।...

मैंने यह भी कहा है कि कृपा अचानक किसी की क्षण कार्य कर सकती है, परन्तु उस पर व्यक्ति का वश नहीं चलता, क्योंकि यह एक ऐसे गणनातीत संकल्प के द्वारा चालित होती है जो चीजों को उस प्रकार से देखता है जिस प्रकार से मन नहीं देख सकता। यही कारण है कि मनुष्य को कभी निराश नहीं होना चाहिये — और इसलिए भी कि भगवान के लिए सच्ची अभीप्सा अन्ततोगत्वा कभी विफल नहीं होती।

CWSA 29: 174

भगवान् के साथ हमेशा ऐसे सम्पर्क में रहने के लिए हमें क्या करना चाहिये कि कोई भी व्यक्ति या घटना हमें इस सम्पर्क से अलग न कर सके?

अभीप्सा, सच्चाई।

CWM 14: 207

माताजी, आपने कहा है कि मानसिक रूप में अगर हम किसी चीज के बारे में सोचें तो हम तुरन्त उस चीज की उपस्थिति में होते हैं, लेकिन, उदाहरण के लिए, अगर हम मानसिक रूप से किसी उच्चतर चीज के बारे में सोचें, उदाहरण के लिए, भगवान् के बारे में?

हां।

तो क्या हम तुरन्त 'उनकी उपस्थिति' में जा पहुंचते हैं?

हां, लेकिन केवल विचार का वह भाग, तुम्हारा शरीर नहीं। मैंने ठीक यही कहा था। मानसिक क्षेत्र में ऐसा ही है; अगर तुम भगवान् पर एकाग्र होओ और भगवान् के बारे में सोचो, तो वह भाग... मैं यह नहीं कहती कि पूरा विचार, क्योंकि विचार बहुविध और विभक्त होता है, लेकिन वह भाग जो सच्चाई के साथ भगवान् पर एकाग्र होता है, वह उनके साथ होता है।

CWM 7: 217

और कितने विस्मयजनक ढंग से चीजें संघटित हो जाती हैं जब तुम वास्तव में और सच्चाई के साथ अपने आपको भगवान के हाथों में सौंप देते हो! इस वर्ष, (श्रीअरविन्द जन्म शताब्दी वर्ष - १९७२), उदाहरण के लिए मानों श्रीअरविन्द की चेतना में स्नान कर रहे हों, ऐसा अनुभव होता है।

Mother's Conversation with a Disciple, 16.02.1972

अपनी प्रकृति, अपने सत्य के अनुसार जीने वाली हर सत्ता को चीजों का उपयोग करने का अपना तरीका सहज रूप से खोज लेना चाहिये। जब तुम अपनी सत्ता के सत्य के अनुसार जीते हो, तो तुम्हें चीजें सीखने की कोई आवश्यकता नहीं होती, तुम उन्हें सहज रूप में, आन्तरिक नियम के अनुसार करते हो। जब तुम अपनी प्रकृति का अनुसरण सहज रूप से निष्कपटता के साथ करते हो तब तुम दिव्य होते हो।

CWM 15 : 387

भगवान का दरवाजा उसके लिए कभी बन्द नहीं रहता जो सच्चाई के साथ उसे खटखटाता है, चाहे वह कोई भी हो, चाहे उसने पहले कितनी ही भूलें की हों। मानवीय गुण और दोष आन्तरिक भागवत तत्व के चमकीले और काले आवरण हैं जो एक बार आवरण को भेद दे तब आत्मन की ओर दोनों से होकर प्रज्वलित रह सकता है।

CWSA 29 :42

भागवत कृपा

सामर्थ्य का आध्यात्मिक सिद्धि के लिए मूल्य है, किन्तु यह कहना, कि यह केवल सामर्थ्य के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है अन्यथा नहीं, एक हिंसात्मक अतिशयोक्ति होगी। भागवत कृपा कपोल कल्पना नहीं है, यह आध्यात्मिक सिद्धि का एक तथ्य है। ऐसे बहुत लोग हैं जो बुद्धिमानों तथा शक्तिशालियों

द्वारा बिलकुल बेकार माने जाते हैं; निरक्षर, मानसिक सामर्थ्य से शून्य, चरित्र तथा संकल्प की शक्ति से शून्य पर फिर भी उनमें अभीप्सा थी और अचानक अथवा तेजी से उन्होंने आध्यात्मिक सिद्धि प्राप्त कर ली, क्योंकि उनमें श्रद्धा थी अथवा क्योंकि उनमें सच्चाई थी। मैं नहीं समझता क्यों आध्यात्मिक इतिहास के तथ्यों पर जो बिल्कुल सामान्य आध्यात्मिक अनुभूति की बातें हैं — चर्चा की जानी चाहिये और उन्हें अस्वीकार करना चाहिये या उन पर टीका-टिप्पणी की जानी चाहिये मानों वे मात्र अटकलबाजी हों। सामर्थ्य, यदि यह आध्यात्मिक है, आध्यात्मिक सिद्धि की एक शक्ति है; इससे महत्तर शक्ति है सच्चाई; इन सबसे महानतम शक्ति है भागवत कृपा। मैंने असंख्य बार कहा है कि यदि व्यक्ति सच्चा है तब वह दीर्घ विलम्ब तथा दुर्दमनीय कठिनाइयों के बावजूद सफलता प्राप्त कर लेगा।

CWSA 29:172

मधुर मां, व्यक्ति योग कैसे करता है?

पूरी तरह सच्चे बनो, कभी दूसरों को छलने की कोशिश मत करो। और कोशिश करो कि अपने-आपको कभी धोखा न दो।

CWM 14 :70

'शाश्वत चेतना' के सामने सच्चाई की एक बूंद का मूल्य पाखण्ड और ढोंग के सागर से बढ़कर है।

CWM 12: 129

सफलता पूरी तरह सच्चाई पर निर्भर है।

CWM 15: 88

पूर्ण रूप से सच्चा, निष्कपट, खुला होना मानव प्रकृति के लिए आसान उपलब्धि नहीं है। केवल आध्यात्मिक प्रयास के द्वारा ही व्यक्ति इसे प्राप्त कर सकता है... *CWSA 29: 51*

सच्चाई और विजय

सच्चाई शायद सब चीजों में सबसे कठिन है और शायद सबसे अधिक प्रभावशाली भी।

अगर तुम्हारे अन्दर पूर्ण सच्चाई है तो तुम्हारी विजय निश्चित है। यह अत्यधिक कठिन है। सच्चाई है सत्ता के सभी तत्त्वों में, सारी गतिविधियों में (चाहे वे भीतरी हों या बाहरी), सत्ता के सभी भागों में यह एकमात्र संकल्प लाना कि हमें केवल भगवान् का ही अंश होना है, भगवान् के लिए ही

जीना है, भगवान् जो चाहते हैं उसी को चाहना है, भागवत संकल्प को ही अभिव्यक्त करना है, भगवान् के अतिरिक्त कोई और शक्ति-स्रोत नहीं रखना है।

और तुम देखोगे कि ऐसा एक भी दिन नहीं, एक भी घण्टा नहीं, एक भी क्षण नहीं जब तुम्हें अपनी सच्चाई को तीव्र बनाने की जरूरत न पड़े, सुधारना न पड़े — भगवान् को धोखा देने से एकदम इन्कार। पहली बात है अपने-आपको धोखा न देना। व्यक्ति जानता है कि भगवान् को धोखा नहीं दिया जा सकता; असुरों में सबसे चतुर भी भगवान् को धोखा नहीं दे सकता। यह सब समझ लेने के बाद भी, हम देखते हैं कि व्यक्ति बहुधा अपने जीवन में दिन भर बिना जाने, निरायास, लगभग यन्त्रवत् अपने-आपको धोखा देने की कोशिश करता है। व्यक्ति जो कुछ करता है उसकी, अपने शब्दों की और अपनी क्रियाओं की हमेशा ही अनुकूल व्याख्या कर लेता है। पहले यही होता है। मैं यहां स्पष्ट दीखने वाली चीजों की बात नहीं कर रही, जैसे लड़-झगड़ कर आदमी कहता हैः ''यह दूसरे का दोष है।'' मैं दैनिक जीवन की छोटी-छोटी चीजों की बात कर रही हूं।

मैं एक बच्चे को जानती हूं जो एक दरवाजे से टकरा गया और फिर उसने दरवाजे को एक अच्छी-सी लात जमायी। बात यही है। बात यही है। हमेशा गलती दूसरे की होती है, दूसरा ही भूलें करता है। बचपन की अवस्था पार कर लेने के बाद भी, जब तुम्हारे अन्दर तर्क-बुद्धि आ जाती है, तुम बहुत मूर्खतापूर्ण बहाने बनाते होः ''अगर उसने यह न किया होता तो मैं ऐसा न करता।'' लेकिन बात इससे ठीक उल्टी होनी चाहिये!

मैं इसी को सच्चा या निष्कपट होना कहती हूं। जब तुम किसी के साथ हो और निष्कपट हो, तो तुरन्त तुम्हारी प्रतिक्रिया यही होनी चाहिये कि तुम ठीक चीज करो, भले तुम जिसके साथ हो वह ठीक चीज न भी करे। सबसे सामान्य उदाहरण ले लोः कोई नाराज होता है, उसे चोट पहुंचाने वाली बातें कहने की जगह तुम चुप रहते हो, स्थिर और शान्त रहते हो। तुम्हें उसके गुस्से की छूत नहीं लगती। जरा अपनी ओर देखने से ही तुम्हें पता लग जायेगा कि यह आसान है या नहीं। यह बिलकुल प्रारम्भिक चीज है। यह जानने के लिए कि तुम सच्चे और निष्कपट हो या नहीं, बहुत-ही छोटा-सा आरम्भ है। और मैं उन लोगों की बात नहीं कर रही जो हर छूत के, यहां तक कि भद्दे मजाकों के भी शिकार हो जाते हैं; मैं उनकी बात भी नहीं कर रही जो वही मूर्खता करते हैं जो दूसरे करते हैं।

मैं तुमसे कहती हूंः अगर तुम अपने-आपको पैनी दृष्टि से टटोलो तो तुम अपने सामान्य मनोभाव में निष्कपट होने की कोशिश करते हुए भी अपने अन्दर सैकड़ों कपट और कुटिलताएं देखोगे। तुम देखोगे कि यह कितना कठिन है।

मैं तुमसे कहती हूंः अगर तुम अपनी सत्ता के सभी तत्त्वों में, अपने शरीर के कोषाणुओं तक में सच्चे और निष्कपट हो, अगर तुम्हारी सारी सत्ता समग्र रूप से भगवान् को चाहती है तो तुम्हारी विजय निश्चित है, लेकिन उससे जरा भी कम में नहीं। इसी को मैं सच्चा या निष्कपट होना कहती हूं।

मैं ऐसी स्पष्ट दीखने वाली चीजों की बात नहीं कर रही जैसे कोई अपने आवेगों और सनकों के अनुसार काम करे और कहेः ''मैं अब अपना नहीं रहा, मैं पूरी तरह भगवान् का हूं। भगवान् ही मेरे अन्दर सब कुछ कर रहे हैं, वे ही मेरे अन्दर क्रियाशील हैं।'' यह तो अपने-आपमें काफी अनगढ़ चीज है। मैं ज्यादा सुसंस्कृत लोगों की बात कर रही हूं जो जरा कुलीन होते हैं और अपनी इच्छाओं को छिपाने के लिए सुन्दर-सा चोगा डाल लेते हैं।

दिन-भर में कितनी चीजें, कितने विचार, कितने संवेदन, कितनी क्रियाएं शुद्ध रूप से भगवान् की ओर अभीप्सा में मुड़ी होती हैं? कितनी? मुझे लगता है कि सारे दिन में एक भी हो तो उसे सुनहरे अक्षरों में लिखा जा सकता है।

जब मैं कहती हूंः ''यदि तुम निष्कपट हो तो तुम्हारी विजय निश्चित है,'' तो मेरा मतलब सच्ची निष्कपटता से होता है, मेरा मतलब होता है कि तुम हमेशा सच्ची ज्वाला बने रहो जो आत्म-निवेदन के रूप में जलती रहती है। सच्ची निष्कपटता है केवल भगवान् के लिए और भगवान् के द्वारा जीने का तीव्र आनन्द, और यह अनुभव कि उनके बिना किसी चीज का अस्तित्व नहीं है, उनके बिना जीवन का कोई अर्थ नहीं रहता, किसी चीज का कोई हेतु नहीं होता, किसी चीज का कोई मूल्य नहीं होता, किसी चीज में रस नहीं होता जब तक कि उस सबके प्रति जिसे हम भगवान् कहते हैं (क्योंकि किसी-न-किसी शब्द का उपयोग तो करना ही होगा), यह पुकार, यह अभीप्सा, परम सत्य के प्रति उद्घाटन न हो। सारे विश्व के अस्तित्व का यही एकमात्र हेतु है। उसे अलग कर दो और सब कुछ गायब हो जायेगा।

CWM 5: 5-7

महत्त्वपूर्ण बात है अधिक से अधिक सच्चा होना, हमेशा अधिक सच्चा होना जिससे तुम अपने-आपको अपनी अभीप्सा की पूर्णता में कभी धोखा न दो।

यह सच्चाई निश्चित रूप से 'भागवत कृपा' लाती है।

CWM 14: 77

हमेशा सच्चे

सच्चे रहो, हमेशा सच्चे, अधिकाधिक सच्चे।

सच्चाई हर एक से यह मांग करती है कि वह केवल अपनी सत्ता के सत्य को अभिव्यक्त करे।

CWM 16: 164

D ने मुझसे पूछा कि उसके जप के समय में परिवर्तन करने का क्या बहुत अधिक महत्व है। मैंने उसे कहा कि यदि परिवर्तन करना जरूरी हो वह कर सकती है यदि वह सच्ची बनी रहे — यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण वस्तु है।

... इसलिए, मैंने उसे कहाः बशर्ते, तुम अपनी मनोवृति में सच्ची हो, सब कुछ ठीक है।

(श्रीमाँ की वार्ता शिष्य द्वारा लिखित)

इस बात पर विश्वास रखो कि जो कुछ घटता है वह हमें ठीक वही पाठ देने के लिए होता है जिसकी हमें जरूरत है, और अगर हम ''साधना'' में सच्चे हैं तो पाठ को आनन्द और कृतज्ञता के साथ स्वीकार करना चाहिये।

जो दिव्य जीवन के लिए अभीप्सा करता है उसके लिए अन्धी और अज्ञ मानवजाति के कर्मों का क्या मूल्य हो सकता है?

CWM 14: 242

सब कुछ हर एक की वृत्ति और उसके दृष्टिकोण की सच्चाई पर निर्भर है।

CWM 15: 248

एक चीज तुम्हें अवश्य जानना चाहिये और कभी नहीं भूलना चाहिये — यह है : जो भी सत्य और सच्चा है वह सब बचा कर रख लिया जायेगा — केवल जो मिथ्या और कपटपूर्ण है नष्ट हो जायेगा।

CWM 15: 248

मार्ग लम्बा, बहुत लम्बा, लगभग अन्तहीन है।

यह सच है कि मार्ग बहुत लम्बा है, लेकिन जो सच्चाई के साथ उसका अनुसरण करता है उसके लिए सचमुच बहुत मजेदार है और पग-पग पर तुम्हें अपने श्रम के लिए पुरस्कार मिलता है।

CWM 16: 375

बालवत् पथ हमेशा अधिक अच्छा होता है ---- लेकिन इतना आसान नहीं होता, क्योंकि उसे सहज रूप से और पूरी निष्कपटता के साथ अपनाना चाहिये।

CWM 17: 121

हर कर्म का उत्सर्ग

... यान्त्रिक दृढ़ता का आध्यात्मिक विकास पर जहाँ सम्पूर्ण सच्चाई या निष्कपटता का सहज भाव अनिवार्य है नहीं के बराबर या बहुत ही कम प्रभाव होता है।

श्रीअरविन्द ने इस विषय में बहुत स्पष्ट रूप से लिखा है और उन्होंने जो लिखा है वह 'योग-समन्वय' में छपा भी है।

फिर भी, मार्ग पर चलने के लिए आरम्भिक सहायता के रूप में मैं तुमसे कह सकती हूं: १.सवेरे उठ कर, दिन आरम्भ करने से पहले, भगवान् के प्रति दिन का उत्सर्ग करना अच्छा है, तुम जो कुछ सोचते हो, तुम जो कुछ हो, तुम जो कुछ करोगे उस सबका उत्सर्ग; २. और रात को सोने से पहले, ज्यादा अच्छा है कि सारे दिन पर नजर डाल लो, उन अवसरों की ओर ध्यान दो जब तुम अपना और अपनी समस्त क्रियाओं का भगवान् के प्रति उत्सर्ग करना भूल गये या उसकी अवहेलना की, और यह अभीप्सा करो कि ये भूलें फिर से न होने पायें।

यह कम-से-कम है, बहुत ही छोटा-सा आरम्भ----और इसे तुम्हारे समर्पण की वृद्धि के साथ बढ़ना चाहिये।

CWM 16: 315-16

माताजी, जब हम प्रयास करते हैं तो हमारे अन्दर कोई चीज बहुत ज्यादा आत्म-तुष्ट हो जाती है, शेखी बघारती है और अपने प्रयास से सन्तुष्ट हो जाती है और इससे सब कुछ बिगड़ जाता है। तो हम इससे कैसे पिण्ड छुड़ा सकते हैं?

आह, यह वह है जो देखा करता है कि तुम क्या कर रहे हो! जब तुम कुछ करते हो तो हमेशा कोई उसे देखता रहता है। तो कभी-कभी, वह गर्व से फूल उठता है। स्पष्ट है कि गर्व प्रयास में से बहुत सारे बल को खींच लेता है। मेरा ख्याल है कि यह वही चीज है: यह अपने-आपको कार्य करते हुए, अपने-आपको जीते हुए देखने की आदत है। अपने-आपका अवलोकन जरूरी है, लेकिन मेरा ख्याल है कि

पूरी तरह सच्चा और सहज होना उससे भी ज्यादा जरूरी है, तुम जो कुछ करो उसमें बहुत ज्यादा सहज-स्वाभाविक होओः हमेशा अपने-आपको काम करते हुए देखते न रहो और अपने-आपकी परख----कभी-कभी कड़ाई के साथ परख----न करते रहो। वास्तव में, यह लगभग उतना ही बुरा है जितना सन्तोष के साथ अपने-आपको शाबाशी देना। दोनों चीजें समान रूप से बुरी हैं। तुम्हें अपनी अभीप्सा में इतना सच्चा होना चाहिये कि तुम्हें पता भी न चले कि तुम अभीप्सा कर रहे हो, तुम स्वयं अभीप्सा बन जाओ। जब वास्तव में इतनी प्राप्ति हो जाये, तो तुम एक असाधारण शक्ति पा लोगे।

एक मिनट के लिए, तुम इसे बस, एक मिनट के लिए पा लो, और तुम बरसों की सिद्धि के लिए तैयारी कर लोगे।

CWM 6: 453

क्या करना चाहिये? .... सच्चे बनो।

बस, यही है वह चीज; सदा, सर्वदा, फल के अन्दर का नन्हा-सा कीड़ा। मनुष्य अपने-आपसे कहता हैः ''ओह! मैं यह नहीं कर सकता।'' यह बात सच नहीं है, यदि मनुष्य चाहे तो वह कर सकता है।

और ऐसे लोग हैं जो मुझसे कहते हैंः ''मुझमें संकल्प-शक्ति नहीं है।'' इसका मतलब है कि तुम सच्चे नहीं हो। क्योंकि सच्चाई संसार की सभी संकल्प शक्तियों से अनन्त गुना अधिक बलशाली शक्ति है। वह चाहे किसी भी चीज को पलभर में बदल सकती हैः यह उसे लेकर, कस कर पकड़ कर बाहर खींच लेती है----और तब सब कुछ समाप्त हो जाता है।

परन्तु मनुष्य अपनी आंखें बन्द कर लेता है, अपने लिए बहाने ढूंढ़ लेता है।

CWM 8: 19

... मैं जिसे सच्चा होना कहती हूं वह यह हैः अगर तुम्हें यह लगता है कि यह नयी उपलब्धि सचमुच एकमात्र ऐसी चीज है जो जीवन में लायी जा सकती है, अगर जो है वह असह्य है----केवल तुम्हारे अपने लिए नहीं, शायद इतना अपने लिए नहीं --- फिर भी... अगर तुम एकदम स्वार्थी और निकृष्ट नहीं हो, तो तुम अनुभव करते हो कि सचमुच, वह काफी लम्बे समय तक रह चुका, कि तुम उससे ऊब उठे, कि उसे बदलना चाहिये----हां, तो जब तुम्हें ऐसा लगता है, तो तुम सब कुछ लेकर, तुम जो कुछ हो, तुम जो कुछ कर सकते हो, तुम्हारे पास जो कुछ है, इस सबको लेकर तुम अपने-आपको उसमें पूरी तरह झोंक देते हो और पीछे देखते तक नहीं, फिर चाहे जो हो! मैं सचमुच ऐसा अनुभव करती हूं कि तट पर खड़े कांपते रहने और यह सोचने की अपेक्षा किः ''अगर मैं यह

अंधाधुंध कदम उठा लूं तो कल क्या होगा?'' खाई में भी कूद पड़ना अधिक अच्छा होगा। तो यह बात है।

ज्यादा अच्छा है कि जोखिम उठा कर दांव लगाया जाये, जैसा कि लोग कहा करते हैं! मेरी यही राय है।

CWM 7: 360

कोई चीज 'भागवत चेतना' के साथ एक होने से बढ़कर सुन्दर नहीं है।

यदि तुम पूरी सच्चाई के साथ खोजो तो तुम जिसे खोज रहे हो उसे अवश्य पाओगे, क्योंकि तुम जिसे खोज रहे हो वह तुम्हारे अन्दर ही है।

CWM 14: 19

मनुष्य ज्वलन्त रूप से किस प्रकार उद्घाटित हो सकता है?

यदि तुम चाहो तो ''ज्वलन्त रूप से'' शब्दों के स्थान पर ''सच्चाई के साथ'' अथवा ''पारदर्शक रूप से'' शब्द रख सकते हो, किसी ऐसी चीज की तरह जो अपारदर्शक न हो या विकृत न करती हो; कोई स्वच्छ, पारदर्शक, सच्ची वस्तु हो जो कोई रुकावट न देती हो।

तुम एक वातायन का रूपक ले सकते हो जो प्रकाश की ओर खुला है। यदि तुम्हारे वातायन में काले किये हुए या धुंधले अपारदर्शक शीशे लगे हैं तो जो कुछ उनसे होकर आता है वह स्वभावतः धुंधला और अपारदर्शक हो जाता है और बहुत कम ही उनसे होकर आ पाता है। और यदि वे बिलकुल पारदर्शक शीशे हों तो उनसे होकर चमकीला प्रकाश ही आता है। अथवा, यदि तुम्हारे शीशे रंगीन हों तो जब प्रकाश तुम्हारे पास पहुंचता है वह किसी-न-किसी रूप में रंगा हुआ होता है। परन्तु वे यदि पूर्ण रूप से निर्मल और उज्ज्वल हों तो उनसे होकर शुद्ध और उज्ज्वल प्रकाश ही आता है।

CWM 8: 82-83

आत्मविश्वास

हम सबमें असंयम के प्रति आसक्ति का अक्षय भण्डार सञ्चित है, और अक्सर हम अपनी छोटी-छोटी आन्तरिक गतिविधियों के प्रति बड़ा सम्मान दिखाते हैं और उनको इतना महत्त्व दे देते हैं जितना निश्चित ही उनका होता नहीं----हमारे विकास के लिए भी नहीं होता।

जब मनुष्य अपने ऊपर इतना संयम प्राप्त कर ले कि वह अपनी मनःस्थितियों का ठण्डे दिमाग से विश्लेषण कर सके, उनकी छान-बीन कर सके, उनकी ऊपरी चमक-दमक या दुःखदायी झलक को अलग करके उन्हें अपने असली बचकाने रूप में देख सके, तब वह उनका कुछ उपयोगी अध्ययन कर सकता है। पर यह अवस्था बहुत धीरे-धीरे आती है, जब कि मनुष्य पूर्ण निष्पक्ष भाव में काफी सोच-विचार कर चुकता है। इसमें साधारणतया जो गड़बड़ हो जाती है उससे बचने के लिए मैं यहां अपने विषय से हट कर एक बात कहती हूं।

मैंने अभी कहा था कि हम अपने विषय में बड़े उदार विचार रखते हैं और मेरे ख्याल से वास्तव में हमारे दोष भी प्रायः हमें आकर्षक प्रतीत होते हैं, अपनी सब कमजोरियों को हम उचित ठहराते हैं। परन्तु सच तो यह है कि आत्म-विश्वास की कमी से हम ऐसा करते हैं। क्या आपको इससे आश्चर्य होता है? --- हां, मैं फिर कहती हूं कि अपने अन्दर आत्म-विश्वास की कमी से हम ऐसा करते हैं। यह कमी उसमें नहीं है जो हम इस क्षण हैं और न ही यह हमारी बाह्य सत्ता में है जो क्षणिक और सदा परिवर्तनशील है----यह तो हमें सदा लुभावनी लगती है----बल्कि हमारे अन्दर उस चीज के लिए विश्वास की कमी है जो हम प्रयास से बन सकते हैं, हमें उस पूर्ण तथा गहन रूपान्तर में विश्वास नहीं है जो हमारी आत्मा का, उस अमर अविनाशी भगवान् का कार्य होगा जो सब जीवों में निवास करता है। और यह कार्य तभी होगा जब हम अपने-आपको बालक की भांति उनके अनन्त ज्योतिर्मय दूरदर्शी पथ-प्रदर्शन पर छोड़ देंगे।

पर यहां विश्वास और आसक्ति को मिला-जुला देना ठीक न होगा --- अच्छा, तो मैं फिर अपने विषय पर आती हूं।

जब आप विधिबद्ध और बार-बार के प्रयास द्वारा अपने असम्बद्ध और दुःखदायी विचारों के इस प्रवाह से अलग हट कर उसको साक्षी रूप में देख सकने में सफल हो जायेंगे, तब आपको एक नयी वस्तु दिखायी पड़ेगी।

आप देखेंगे कि आपके अन्दर कुछ विचार ऐसे हैं जो औरों से अधिक प्रबल, अधिक स्थायी हैं -- -- ऐसे विचार जिनका सम्बन्ध सामाजिक रूढ़ियों, प्रचलित रीतियों, नैतिक नियमों, यहां तक कि मनुष्य तथा संसार पर लागू साधारण नियमों से है।

ये विचार ही इन विषयों पर आपकी सम्मतियां हैं, कम-से-कम आप ऐसा ही दम भरते हैं और इन्हीं के अनुसार काम करने की चेष्टा भी करते हैं।

इनमें से आप एक विचार को ले लीजिये जो आपके सबसे अधिक निकट है। इसका आप ध्यानपूर्वक, पूरी सच्चाई के साथ निरीक्षण कीजिये, यथासम्भव सब पक्षपात से परे हटा कर। अब अपने-आपसे प्रश्न कीजिये कि इस विषय में आपका यही मत क्यों है, दूसरा क्यों नहीं।

इसका उत्तर लगभग सभी अवस्थाओं में यही या इससे मिलता-जुलता होगाः

क्योंकि आपके समाज में यही विचार प्रचलित है, आपको भी इसे ऐसे ही अपनाना उचित है और इससे आप कई प्रकार की ठोकरों, मुठभेड़ों और अप्रिय आलोचनाओं से बच जाते हैं। या फिर यह कि यही विचार आपके माता-पिता का भी था और इसी के वातावरण में आपका बचपन बीता है।

या फिर यह भी हो सकता है कि यह आपकी उस धार्मिक या दूसरी प्रकार की शिक्षा का सामान्य फल है जो आपको तरुणावस्था में मिली है। यह विचार आपका अपना तो नहीं है।

आपका अपना विचार होने के लिए इसे आपके बौद्धिक संश्लेषण का अंग होना चाहिये जो आपके अपने जीवनकाल में ही यत्नपूर्वक निर्मित हुआ हो, चाहे वह निरीक्षण, परीक्षण, अनुभव या तर्क द्वारा रचा गया हो या फिर वह गहन, गभीर चिन्तन या मनन का फल हो।

यह हमारी दूसरी उपलब्धि है।

क्योंकि हममें सद्भावना है और हम अपने अन्दर पूर्ण सच्चाई लाने की कोशिश कर रहे हैं, अर्थात्, अपने कर्मों को विचारों के अनुकूल बनाना चाह रहे हैं, हमें यह मानना पड़ेगा कि हम साधारणतया उन मनगढ़न्त नियमों के अनुसार कार्य करते हैं जिन्हें हमने बाहर से ग्रहण किया है। हमने न तो इनको सचेतन रूप में और न ही परिपक्व सोच-विचार या विश्लेषण करने के बाद अपनाया है। ये हमारे इसलिए हैं क्योंकि अचेतन अवस्था में पीढ़ियों से हम इनके अधिकार में चले आ रहे हैं। इसमें कुछ हाथ हमारी शिक्षा-दीक्षा का भी है। सबसे अधिक प्रभाव हम पर सामूहिक प्रेरणा का है जो अपने-आपमें इतनी शक्तिशाली, इतनी उद्दाम होती है कि बहुत कम लोग इससे पूरी तरह बच निकलने में सफल हो पाते हैं।

जो मानसिक व्यक्तित्व हम प्राप्त करना चाहते हैं उससे हम अभी कितनी दूर हैं! हम तो अपने पहले के संस्कारों की उपजमात्र हैं, अपने आस-पास वालों की अन्ध और उद्दाम इच्छाओं द्वारा विवश किये गये हैं।

कैसी दुःखजनक अवस्था है यह...। पर इससे हमें हताश नहीं हो जाना चाहिये; हमें अधिक उत्साह से इसके प्रतिकार में लग जाना चाहिये। जितनी प्रचण्ड यह बुराई है उतना आवश्यक इसका उपचार भी है।

तरीका वही होगाः सोचो, सोचो और खूब सोचो।

इन विचारों में से हमें एक-एक को लेकर बारी-बारी से उसका विश्लेषण करना चाहिये। ऐसा करते समय यह आवश्यक है कि हम अपने समस्त विवेक, पूर्ण शुद्ध भाव तथा अधिक-से-अधिक न्यायबुद्धि की सहायता लें। विचारों को हमें अपने अर्जित ज्ञान और संगृहीत अनुभव के तराजू पर तोलना चाहिये। इसके बाद हमारा प्रयत्न यह होगा कि हम इनमें अनुकूलता लाकर परस्पर सामञ्जस्य स्थापित कर दें। पर यह कार्य बहुधा होता बड़ा कठिन है। क्योंकि हमारे अन्दर की एक शोचनीय प्रवृत्ति के फलस्वरूप हमारे मस्तिष्क में कई प्रकार के अत्यन्त परस्पर-विरोधी विचार भी साथ-साथ रहते हैं।

हमें इन सबको क्रमानुसार अपने स्थान पर रखना होगा, अपने मन-रूपी घर में व्यवस्था स्थापित करनी होगी, और यह सफाई हमें प्रतिदिन उसी प्रकार करनी चाहिये जिस प्रकार हम अपने रहने के कमरे की करते हैं, क्योंकि मेरे ख्याल में अपने मन की ओर भी हमें उतना ही ध्यान देने की आवश्यकता है जितना कि हम अपने घर की ओर देते हैं।

लेकिन, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इस काम को यथार्थ रूप में सफल बनाने के लिए आवश्यक है कि हम अपने अन्दर अधिक-से-अधिक आत्मिक शान्ति और सच्चाई स्थापित कर लें जिससे यह अवस्था सदा के लिए हमारी अपनी हो जाये।

हम इतने निर्मल हो जायें कि जिन विचारों का हमें निरीक्षण, विश्लेषण तथा वर्गीकरण करना है उनको हमारे अन्दर की ज्योति पूरी तरह से प्रदीप्त कर दे। अपनी छोटी-छोटी इच्छाओं तथा व्यक्तिगत सुविधाओं का त्याग करने के लिए हम निष्पक्ष और साहसी बनें। सर्वथा पक्षपातरहित होकर हम उन विचारों का उनके असली रूप में, उनके अपने लिए अवलोकन करें।

यदि हम अपने इस वर्गीकरण के कार्य में धीरतापूर्वक लगे रहें तो हम देखेंगे, कि हमारे मस्तिष्क में धीरे-धीरे व्यवस्था और प्रकाश का साम्राज्य स्थापित होता जा रहा है, पर हमें यह नहीं भूल जाना

चाहिये कि यह व्यवस्था उस व्यवस्था के सामने विशृंखलता ही है जो भविष्य में हमें प्राप्त करनी है, कि यह प्रकाश उस प्रकाश के सामने, जो हमें कुछ समय बाद प्राप्त होगा, केवल अन्धकार है।

जीवन एक अनवरत क्रमविकास है। यदि हम अपनी मनोवस्था को सजीव रखना चाहते हैं तो हमें बिना रुके उन्नति के पथ पर बढ़ते चले जाना चाहिये।

वैसे है यह कार्य अपने-आपमें अभी प्रारम्भिक ही। हम अभी उस सत्य-विचार से बहुत दूर हैं जो ज्ञान के अपरिमित स्रोत के साथ हमारा सम्बन्ध स्थापित करता है।

ये सब तो हमें अपने विचारों पर विशेष व्यक्तिगत रूप से नियन्त्रण रखना सिखाने के लिए अभ्यासमात्र हैं, क्योंकि जो मनुष्य ध्यान या चिन्तन करना चाहते हैं उनके लिए अपनी मानसिक क्रिया को वश में रखना अत्यन्त आवश्यक है।

मैं ध्यान के बारे में आज आप लोगों को विस्तारपूर्वक तो नहीं बता सकती; मैं केवल इतना कहूंगी कि ध्यान को वास्तविक ध्यान होने के लिए, उसका पूरा उपयोग करने के लिए हमारा सच्चे अर्थों में निःस्वार्थ, निर्वैयक्तिक होना आवश्यक है।

पूर्ण सत्य असीम उन्नति के पथ पर चलते हुए जगत् के विकासशील ज्ञान के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। ऐसे सत्य की खोज के लिए जो व्यक्ति सच्चे भाव से प्रयत्न करता है, उसके अधिकाधिक निकट पहुंचने के लिए आवश्यकता पड़ने पर उस सबका त्याग करने को प्रस्तुत रहता है जिसको अब तक वह सत्य मानता आया है, वही धीरे-धीरे गहनतम, पूर्णतम तथा अनन्त प्रकाशमय विचार-समूहों के साथ अपना सम्बन्ध स्थापित कर सकता है।

ध्यान और चिन्तन की सहायता से जब वह सच्ची बौद्धिक शक्ति की महान् संसारव्यापी लहर के सीधे सम्पर्क में आ जाता है तब कोई ज्ञान उससे छिपा नहीं रहता।

उस क्षण से अविचलता के साथ-साथ मानसिक शान्ति भी उसके हिस्से आ जाती है। अपनी सभी धारणाओं, समस्त मानवीय ज्ञान और धार्मिक शिक्षाओं के बीच में से भी, जो कभी-कभी आपस में कितने विरोधी प्रतीत होते हैं, वह उस गूढ़ सत्य को देख लेता है जिसे तब कोई शक्ति उसकी दृष्टि से ओझल नहीं रख सकती।

भूलें और अज्ञानवश किये गये कार्य भी उसको तब क्षुब्ध नहीं करते, जैसा कि एक महापुरुष ने कहा हैः

''जो सत्य के पथ पर बढ़ रहा है उसको कोई भूल कष्ट नहीं पहुंचा सकती, क्योंकि वह जानता है कि यह भूल सत्य-पथ पर अग्रसर होने वाले जीवन की प्रारम्भिक चेष्टा है।''

परन्तु पूर्ण अविचलता की इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को विचार के उच्चतम शिखर तक पहुंचना होगा।

वहां तक इतनी जल्दी पहुंचने की आशा न करके भी हमें इसके लिए तो प्रयत्न करना ही है कि हम व्यक्तिगत रूप से मौलिक तथा साथ-ही-साथ जितना सम्भव हो सम्यक्-न्याययुक्त विचार करना सीखें। तब हम एक प्रकार से उन मनीषियों की श्रेणी में आ जायेंगे जो समाज को अपने उच्चतम सहज ज्ञान की अमूल्य सहायता पहुंचाने के योग्य होते हैं।

आज मैंने विचार के विषय में इस प्रकार की बातचीत की है मानों वह एक सजीव और सक्रिय सत्ता हो, इसलिए इसकी थोड़ी व्याख्या करने की आवश्यकता है। पर मैं अगली बैठक में, यदि हो सका तो, वैज्ञानिक ढंग से यह बताने का यत्न करूंगी कि इसकी भीतरी बनावट, रचना आदि क्या है, अर्थात्, यह कैसे उत्पन्न होता है, जीवित रहता है, कार्य करता तथा परिवर्तन लाता है।

अपना कथन समाप्त करने से पहले मैं आपसे अपनी एक अभिलाषा प्रकट करने की अनुमति अवश्य चाहती हूं।

वह यह है कि हम आज से यह निश्चय कर लें कि हम अपने-आपको प्रतिदिन पूरी सच्चाई तथा सदिच्छा के साथ ऊपर उठायेंगे; एक तीव्र अभीप्सा के साथ उस सत्य के सूर्य की ओर, उस चरम प्रकाश की ओर बढ़ेंगे जो विश्व का बौद्धिक जीवन तथा उसका स्रोत है, ताकि वह प्रकाश हमारे अन्दर पूर्ण रूप से प्रवेश पाकर अपनी महान् ज्योति से हमारे मन, हृदय, सब विचारों और कर्मों को प्रबुद्ध कर दे।

CWM 2: 23-29

अडिग धैर्य

मत भूलो कि यदि तुमने सच्चे प्रयत्न किये हैं फिर भी इन सब कठिनाइयों का अन्त एक दिन में, एक महीने में, एक वर्ष में नहीं हो जायेगा। जब तुम आरम्भ करते हो तब तुम्हें अडिग धैर्य के साथ ही आरम्भ करना चाहिये। तुम्हें यह कहना होगा कि ''मैं जो कुछ पूरा करना चाहता हूं उसमें यदि पचास वर्ष भी लग जायें, सौ वर्ष भी लग जायें, कई जीवन भी लग जायें फिर भी मैं उसे अवश्य पूरा करूंगा।'

CWM 4: 400-01

तुम जो सोचते हो वही बन जाते हो। तुम्हें शक्ति, ईमानदारी और निष्कपटता के बारे में सोचना चाहिये, जो तुम बनना चाहते हो।

CWM 17: 95

हृदय से उठी एक सरल, निष्कपट तथा सच्ची पुकार तथा अभीप्सा एक अत्यन्त महत्वपूर्ण चीज है तथा क्षमताओं की अपेक्षा अधिक अनिवार्य और प्रभावशाली होती है।

CWSA 29: 55

यह स्थिति जो तुम पर हावी होने और तुम्हें अधिकृत करने का प्रयास करती है, वह तुम्हारे सच्चे व्यक्तित्व का भाग नहीं है, बल्कि एक विदेशी प्रभाव है। इसलिए इसके अधीन हो जाना तथा इसे अभिव्यक्त करना सच्चाई नहीं होगी बल्कि तुम्हारी सच्ची सत्ता से अलग कुछ मिथ्यात्व की अभिव्यक्ति होगी, कुछ ऐसी चीज होगी जो, जैसेःजैसे तुम प्रगति करोगे वैसे -वैसे यह अधिक विदेशी प्रतीत होगी। इसे हमेशा इनकार करो जब भी यह आये और तब भी जब इसके स्पर्श को बहुत दृढ़ता से महसूस करो। अपने मन में और आत्मा में श्रीमाँ के प्रति उद्घाटित रहो। अपने संकल्प तथा श्रद्धा को बनाये रखो तब देखोगे कि यह वापस जा रही है। यदि हठपूर्वक यह लौट आती है तब उसी की तरह तथा उससे भी अधिक आग्रह के साथ इनकार करते रहो। इससे वह हतोत्साहित होने और नष्ट होने लग जायेगी और अन्त में दुर्बल तथा बिलकुल नष्ट हो जायेगी।

हमेशा अपनी सत्ता के प्रति सच्चे बने रहो — वह वास्तविक सच्चाई है। अटल बने रहो और विजय प्राप्त करो।

CWSA 31: 788

व्यक्ति को, केवल सच्चाई के साथ अभीप्सा करनी है और अपने को श्रीमाँ की शक्ति के प्रति यथाशक्ति उद्घाटित रखना है।

CWSA 29: 55

मैं विश्वास करता हूँ कि गुरु हमेशा उतना देने के लिए तैयार है जितना दिया जा सकता है यदि शिष्य ग्रहण कर सके, अथवा ऐसा हो सकता है जब वह ग्रहण करने के लिए तैयार हो जाये। यदि वह ग्रहण करने से इनकार कर देता है अथवा आन्तरिक या बाह्य रूप से इस तरह आचरण करता है कि ग्रहण करना असम्भव हो जाये या यदि वह सच्चा नहीं है या गलत मनोवृति अपनाता है, तब चीजें कठिन

हो जाती हैं। परन्तु यदि व्यक्ति सच्चा है और श्रद्धावान है और सही मनोवृति उसमें है तथा यदि गुरु एक सच्चा गुरु है, तब, बाद में चाहे कितना भी समय लगे, यह अवश्य आयेगा।

CWSA 29: 199

विज्ञानमय

यदि तुम बिलकुल सच्चा बनना चाहते हो तो जब कोई बच्चा भी तुम्हारे पास आकर तुमसे कुछ कहे और तुम उसे न समझो तो तुम्हें यह नहीं कहना चाहिये कि ''यह बच्चा नादान है'', बल्कि यह कहना चाहिये कि ''सचमुच में नादान मैं हूं, क्योंकि मैं उसकी बात नहीं समझता!''

किसी समस्या पर दृष्टिपात करने के सैकड़ों तरीके हैं। यदि तुम समाधान पाना चाहते हो तो तुम्हें एक के बाद एक सभी पहलुओं को लेना चाहिये, उनसे ऊपर उठ जाना चाहिये और यह देखना चाहिये कि ये सुसमञ्जस किस प्रकार होते हैं।

चेतना की एक ऐसी अवस्था है जिसे हम ''विज्ञानमय'' (gnostic)नाम दे सकते हैं, जिसमें तुम एक ही साथ सभी सिद्धान्तों, सभी विश्वासों, सभी विचारों को देखने में समर्थ हो जाते हो जिन्हें मनुष्यों ने अपनी उच्चतम चेतना द्वारा व्यक्त किया है। तुम अत्यन्त विपरीत धारणाओं को, जैसे बौद्धों, वैदान्तिकों, ईसाइयों के सिद्धान्तों को, सभी दार्शनिक सिद्धान्तों को, मनुष्य के मन ने जब कभी सत्य के किसी छोटे-से सिरे को पकड़ने का यत्न किया और जो कुछ व्यक्त किया उस सबको एक साथ देख सकते हो। और उस अवस्था में, तुम प्रत्येक वस्तु को न केवल उसके स्थान में रखते हो बल्कि प्रत्येक वस्तु तुम्हें अद्‌भुत रूप में सत्य और किसी वस्तु के विषय में कुछ भी समझने में समर्थ होने के लिए बिलकुल अपरिहार्य प्रतीत होती है। ...

उस अवस्था में कोई भी विपर्यय नहीं होता ---- वह एक समग्रता की स्थिति है, ऐसी समग्रता जिसमें अभिव्यक्त समस्त सत्यों का (जो सम्पूर्ण 'सत्य' को अभिव्यक्त करने में समर्थ नहीं होते) मनुष्य को पूरा ज्ञान हो जाता है, जिसमें मनुष्य यह जान जाता है कि सभी वस्तुओं का अपना-अपना स्थान क्या है, विश्व क्यों और किन वस्तुओं से निर्मित हुआ है। केवल----मैं यह बात तुम्हें जल्दी से बता दूं----यह स्थिति मनुष्य व्यक्तिगत प्रयास से नहीं प्राप्त कर सकता; यह बात नहीं कि चूंकि मनुष्य इसे प्राप्त करने का प्रयत्न करता है इसलिए इसे प्राप्त करता है। तुम सहज-स्वाभाविक रूप में वही बन जाते हो। यदि तुम कहना चाहो तो कह सकते हो कि यह पूर्ण मानसिक सच्चाई का शीर्षबिन्दु है,

जब कि तुम में अब कोई पक्षपात, कोई अभिरुचि, किसी विचार के प्रति कोई आसक्ति नहीं रह जाती, जब तुम सत्य को जानने का अब कोई प्रयास तक नहीं करते।

तुम बस 'ज्योति' के अन्दर खुले रहते हो, केवल इतना ही।

CWM 4: 186-88

निष्कपटता

निष्कपटता का एक क्षण प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त भक्ति के एक दीर्घ जीवन की अपेक्षा कहीं बेहतर है... एक मनोवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक आत्मविजय सभी बाहरी विजयों से अधिक महत्वपूर्ण होती है।

CWM 3: 227

हे प्रभु, मुझे एक पूर्ण और समग्र निष्कपटता दे जिससे मैं तेरी सिद्धि के योग्य हो सकूं।

CWM 15: 212

हे प्रभु, मुझे सम्पूर्ण सत्यनिष्ठा दे, वह सत्यनिष्ठा जो मुझे सीधे तेरी ओर मार्गदर्शित करे।

CWM 15: 213

हे प्रभु, मुझे अपने आशीर्वाद दे जिससे मैं अधिक से अधिक निष्कपट बन सकूं।

CWM 15: 213

हे प्रभु, सत्य की ओर मुझे अपने प्रयास में सचमुच सत्यनिष्ठ बनना सिखा।

CWM 15: 217

हे प्रभु, पूर्ण रूप से तथा सत्यनिष्ठ भाव से मैं तेरा बन जाऊँ।

CWM 15: 210

हे प्रभु, मुझे समग्र सच्चाई प्रदान कर।
हे प्रभु, मुझे सर्वदा के लिए पूर्णतः अपना बना ले।

CWM 15: 210

हे प्रभु, तूने हमारी श्रद्धा की गुणवत्ता की परीक्षा करने का और हमारी सत्यनिष्ठा को अपनी कसौटी पर जाँचने का निर्णय किया है। स्वीकार कर कि हम इस अग्नि परीक्षा से महत्तर और शुद्धतर होकर बाहर निकलें।

CWM 15: 170

बिना विकृत किये नयी चेतना को ग्रहण करने के योग्य बनने के लिए : व्यक्ति को परम चेतना के प्रकाश में बिना छाया के खड़ा होने में समर्थ बनना होगा।

CWM 15: 105

मुझे पूर्णतः पारदर्शक बना दे जिससे मेरी चेतना तेरी चेतना के साथ संयुक्त हो सके।

CWM 15: 213

था उत्कट आत्म-सन्तुलित निर्बाध संकल्प उसका;
मानस उसका था सागर एक उज्ज्वल पारदर्शकता का
प्रवाह में उद्दाम, फिर भी, एक लहर नहीं थी पंकिल उसमें।

CWSA 33: 14-15

समस्त थी सत्यनिष्ठा और सहज शक्ति
वहाँ थी मुक्ति एकमात्र नियम और उच्चतम विधान।

CWSA 33: 127

सच्चा होना केवल एक विशेषण है जिसका अर्थ है कि संकल्प को सच्चा संकल्प बनना होगा। यदि तुम केवल सोचते हो ''मैं अभीप्सा करता हूँ'' और अभीप्सा के विपरीत चीजें करते हो, या अपनी कामनाओं के पीछे भागते हो या अपने को विरोधी प्रभावों के प्रति उद्घाटित करते हो तब यह सच्चा संकल्प नहीं है ।

CWSA 29: 50

हम नाम या यश प्राप्त करने की चेष्टा नहीं कर रहे, हम चाहते हैं भगवान् की अभिव्यक्ति के लिए अपने-आपको तैयार करना। यही कारण है कि हम साहस के साथ कह सकते हैंः प्रतीत होने की अपेक्षा वही बन जाना कहीं अच्छा है। अगर हमारी सच्चाई पूर्ण हो तो हमें अच्छा प्रतीत होने की जरूरत नहीं। और पूर्ण सच्चाई से हमारा अभिप्राय यह है कि हमारे सभी विचार, अनुभव, इन्द्रिय-बोध और कर्म हमारी सत्ता के केन्द्रीय 'सत्य' के सिवा और किसी चीज को अभिव्यक्त न करें।

CWM 12: 293

प्रत्येक को अवसर दिया जाता है और सबके लिए सहायता उपलब्ध है — किन्तु प्रत्येक को लाभ उसकी सच्चाई के अनुपात में मिलता है।

CWM 14: 86

... कहने की आवश्यकता नहीं कि सच्चाई सिद्धि के लिए अनिवार्य शर्त है : समस्त पाखण्ड अधःपतन है।

CWM 12:162

सच्चाई का मापदण्ड सफलता का मापदण्ड है।

*

'श्रद्धा' और 'सच्चाई' सफलता के जुड़वां एजेंट हैं।

CWM 12:115

यह सच है कि आरम्भ के रूप में या आधार के रूप में केन्द्रीय सच्चाई का कुछ महत्व है परन्तु यह पर्याप्त नहीं है। सच्चाई को सम्पूर्ण प्रकृति में विस्तारित होना चाहिये जैसा कि तुम बताते हो। परन्तु फिर भी, जब तक दोहरी प्रकृति नहीं होगी (केन्द्रीय सामंजस्यकारी चेतना के बिना) आधार सामान्यतः ऐसा होने के लिए पर्याप्त है।

CWSA 29: 52

जब भी सच्चाई होती है, तब तुम देखते हो कि सहायता, मार्गदर्शन, भागवत कृपा तुम्हें उत्तर देने के लिए तैयार रहते हैं और तुम अधिक दिनों तक भूल नहीं करते। अभीप्सा में यही निष्कपटता, सत्य के लिए संकल्प में, सचमुच निर्मल बनने की आवश्यकता में --- आध्यात्मिक जीवन में जिसे विशुद्ध कहा जाता है --- यही निष्कपटता समस्त प्रगति की कुंजी है। इसी के द्वारा तुम जान जाते हो --- और तुम समर्थ बन जाते हो।

CWM 3: 192

मुखपृष्ठ पुष्प

निष्कपटता या पारदर्शकता

केवल समग्र सच्चाई के परिणाम के रूप में आ सकती है।

(श्रीमाताजी द्वारा दिया गया पुष्प का आध्यात्मिक नाम व अर्थ)

वानस्पतिक नामः चाइना ऐस्टर